स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत 2023 INDIA

रेल सुरभि अंक - 35

जुलाई - सितंबर - 2023

मुख्यालय राजभाषा विभाग - मध्य रेल

रेल सुरभि

अंक 35

(जुलाई-सितंबर, 2023)

-:संरक्षक:-

राम करन यादव

महाप्रबंधक

:- मार्गदर्शक:-

रेणू शर्मा

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी

तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

:-प्रधान संपादक:-

मनीष सिंह

उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (मा.सं.वि.)

अतिरिक्त प्रभार उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

:-संपादक:-

दीपा मंद्यान

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

:-सहयोग:-

मोहन आवलेकर, वरिष्ठ अनुवादक

हरी प्रकाश श्रीवास्तव, वरिष्ठ अनुवादक

राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक

डॉ. वीरेंद्रसिंह राव, कनिष्ठ अनुवादक

देविना चौकसे, कनिष्ठ अनुवादक

संपर्क का पता

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग

नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट

फोन : 54753/54752/54754 (रेलवे)

022-22697123 (एमटीएनएल)

ई-मेल : dgmol12@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए । रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	मुंशी प्रेमचंद	जीवनी	संकलन	07
2	सुरक्षित दूरी	कहानी	विपिन पवार	09
3	चंद्रयान...गौरव गान..!	कविता	किशोर कुदरे	24
4	मैं अबोध भला क्या जानूं ?	संस्मरण	रजनीश दुबे "धरतीपुत्र"	27
5	कर्मयोगी	कविता	त्रिपुरारी कुमार	29
6	मेरी दौड़ एक जुनून	लेख	मो .ईस्माइलईब्राहिमशेख	30
7	जड़ें	कविता	स्वर्णलता छेनिया	33
8	बांद्रा स्टेशन के विरासत भवन की रोचक जानकारी	लेख	विमलेश चंद्र	34
9	मैं चंद्रयान हूं	कविता	रजनीश दुबे "धरतीपुत्र"	37
10	इंसान इंसानियत भूल रहा है	कविता	संकल्प वर्मा	37
11	सच्चे लोग अच्छे लोग –	लेख	किशोर कुदरे	38
12	राजभाषा कार्यान्वयन - प्रमुख चुनौतियां एवं उपाय	लेख	धर्मेंद्र प्रसाद तिवारी	40
13	फक्त महिलांसाठी	व्यंग्य	देविना चौकसे	42
14	जीवन एक रेल सफर	लेख	भानुप्रताप हाडा	45
15	मैं, जिंदगी और संघर्ष	कविता	रूही कुमारी जायसवाल	46
16	भीड़	लघुकथा	देविना चौकसे	47

मराठी खंड

17	पुस्तक वाचण्याचे फायदे	लेख	सुनील मुकुंद केळकर	48
18	आई	कविता	अंजलि महेश तेरवेणकर	50

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

रेल सुरभि अंक 35 को आपके समक्ष प्रस्तुत करने के साथ-साथ मैं हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार जनों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देती हूं। यूं तो भाषा निरंतर प्रगतिशील रहती है किंतु भाषा वही जीवंत रहती है जिसमें विकास की भरपूर क्षमता हो और यह तभी संभव होगा जब हम बिना किसी भेदभाव के अन्य भाषाओं के आम बोलचाल के शब्दों को आत्मसात करते हुए सहज सरल रूप में जन-जन तक पहुंचा सकें।

हिंदी राजभाषा के रूप में संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोती है। साथ ही साहित्य के माध्यम से मनुष्य को सरल, संवेदनशील भी बनाती है। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा के साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भावनात्मक जुड़ाव भी आवश्यक है। राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका का उद्देश्य जहां एक ओर पाठकों के तकनीकी एवं साहित्य ज्ञान में वृद्धि करना है वहीं दूसरी ओर उन्हें सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है।

रेल सुरभि के सफल प्रकाशन की कामना के साथ इसके प्रकाशन में योगदान देने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों एवं रचनाएं भेजने वाले रचनाकारों को मैं शुभकामनाएं देती हूं और आशा करती हूं कि आप सभी निरंतर यूं ही अपनी रचनाएं हमें भेजते रहेंगे। इसके अतिरिक्त पत्रिका के संबंध में अपने विचार और सुझाव भी हमें भेजते रहें क्योंकि आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

धन्यवाद ।

(रेणू शर्मा)
प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी
एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

सर्वप्रथम रेल सुरभि के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। यूं तो मध्य रेल राजभाषा विभाग की इस गृह पत्रिका से मैं बहुत समय से संपादक के रूप में जुड़ी हुई हूं किंतु संपादकीय पहली बार आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूं। रेल सुरभि जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका का संपादन करना खुशी की बात है। आप सभी पाठकों द्वारा रेल सुरभि की उत्सुकता से राह देखना ही हमें अधिक मेहनत कर हर अंक को और अधिक रूचिकर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

मैं पत्रिका से जुड़े रचनाकारों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिनके रचनात्मक सहयोग से न केवल पत्रिका नियमित प्रकाशित हो रही है बल्कि तकनीकी एवं ज्ञानवर्धक भी बन रही है। दिन प्रतिदिन कर्मचारियों की चिंतन क्षमता व गुणवत्ता में भी निखार आ रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से नित्य नवीन उपलब्धियों को रेखांकित करने का तो प्रयास किया ही जा रहा है, साथ ही सृजनशील कर्मचारियों को भी सामने लाने का प्रयास किया जा रहा है।

यह हर्ष का विषय है कि हमारे पाठकों द्वारा भिन्न-भिन्न विधाओं की रचनाएं भेजी जा रही है। किसी ने सत्य कहा है कि 'हर व्यक्ति के भीतर एक लेखक होता है, आवश्यकता है बस उसे जगाने की।' सबका नजरिया और विश्लेषण का तरीका भिन्न होता है जिसके परिणामस्वरूप विचारधाराओं की विविधता देखने को मिलती है और इसीलिए मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप भी अपनी कलम उठाएं और अपने सृजनात्मक कौशल को निखारें। आप सभी से मेरा अनुरोध है कि इसी तरह राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाएं और अपनी रचनाएं हमें अवश्य भेजें, हम उसे रेल सुरभि में स्थान देने का पूरा प्रयास करेंगे। इसके साथ ही इस अंक को लेकर भी आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद।

(दीपा मंदयान)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

स्वागत

हमारे नए महाप्रबंधक

श्री राम करन यादव भारतीय रेलवे इंजीनियर्स सेवा (आईआरएसई) 1986 बैच के वरिष्ठ अधिकारी हैं। मध्य रेल के महाप्रबंधक के रूप में कार्यभार संभालने से पहले, आप भारतीय रेलवे इंस्टीट्यूट ऑफ सिविल इंजीनियरिंग (इरिसेन), पुणे के महानिदेशक के रूप में कार्यरत थे। आपने 1985 में आईआईटी रूड़की से ऑनर्स के साथ बीई (सिविल) किया। परिवहन इंजीनियरिंग में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर आपको उत्तर प्रदेश पी.डब्ल्यू.डी. शताब्दी स्वर्ण पदक और विश्वविद्यालय रजत पदक प्रदान किया गया। आईआईटी दिल्ली से आपने एम.टेक (सोइल मैकेनिक और फाउंडेशन इंजीनियरिंग) किया है। एसडीए बोकोनी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, मिलान, इटली में कार्यकारी नेतृत्व कार्यक्रम (डीआरएम के लिए) और इनसीड, सिंगापुर और आईसीएलआईएफ, मलेशिया में आपने एडवांस मैनेजमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लिया है। आपने आईएसबी हैदराबाद में रणनीतिक प्रबंधन कार्य और आईएसबी मोहाली में नेतृत्व संवर्धन विकास कार्यक्रम में भी भाग लिया है। आप मार्च, 1988 में रेलवे में शामिल हुए।आपने फील्ड के साथ-साथ मुख्यालयों, पश्चिम रेलवे, उत्तर पूर्वी रेलवे, मध्य रेल, पूर्वी रेलवे, इरिसेन पुणे, राइट्स और दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन में विभिन्न पदों पर कार्य किया है।

पश्चिम रेलवे पर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) के रूप में आपके कार्यकाल में एक वर्ष में पश्चिम रेलवे पर अब तक की सबसे अधिक नई लाइन, गेज परिवर्तन और दोहरीकरण का कार्य पूरा किया गया व अन्य महत्वपूर्ण कार्य किए गए। पूर्वोत्तर रेलवे में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) के रूप में 245 आरकेएम का विद्युतीकरण एक बार में शुरू किया गया जो भारतीय रेलवे की किसी भी निर्माण इकाई द्वारा अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

मध्य रेल पर मुख्य परियोजना निदेशक (स्टेशन विकास) के रूप में आप अजनी, नागपुर में इंटर मॉडल स्टेशन के विकास और योजना के अनुमोदन, घाटकोपर में मेट्रो स्टेशन के साथ स्टेशन के एकीकरण, ठाणे, कल्याण और सीएसएमटी मुंबई स्टेशनों के रीमॉडलिंग और माटुंगा स्टेशन पर रेलवे की जमीन के मुद्रीकरण (मोनेटाइजेशन) में शामिल थे। भुसावल मंडल रेल प्रबंधक के रूप में आपके कार्यकाल में 15 से 17 नवंबर, 2018 तक चलाया गया अभियान भारतीय रेलवे पर अतिक्रमण हटाने के सबसे बड़े अभियान में से एक है। इस दौरान रेलवे की जमीन से 3000 से अधिक घर और लगभग 350 दुकानें और 120 एकड़ से अधिक कीमती संपत्ति हटा कर भूमि पुनः प्राप्त की गई। मार्च, 2019 में आपको मंडल रेल प्रबंधक, भुसावल के रूप में भारतीय रेलवे पर डिलीवरी में सुधार की दिशा में मजबूत नेतृत्व और प्रदर्शन उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए रेल मंत्री से परफोर्मेंस एक्सीलेंस (प्रदर्शन उत्कृष्टता) पुरस्कार मिला। इरिसेन, पुणे में वरिष्ठ संकाय के रूप में आपने संस्थान के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे में अनुबंध और मध्यस्थता पर विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित किए हैं जिनमें इरिसेन जर्नल के लिए लेख लिखना और संपादन करना और भारतीय रेलवे के मुख्य ट्रैक इंजीनियरों के लिए ट्रैक सेमिनार का आयोजन और संचालन करना आदि शामिल हैं।

आपको दादर स्टेशन पर पीएससी गर्डरों के साथ 12 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज (एफओबी), जो रेलवे प्रणाली का सबसे चौड़ा एफओबी है, की उत्कृष्ट योजना और निष्पादन के लिए 1999 में महाप्रबंधक का पुरस्कार मिला है। इसके अलावा वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) के रूप में आपके कार्यकाल के दौरान, पुणे मंडल को मंडल पर इंजीनियरिंग कार्यों की उत्कृष्ट योजना और निष्पादन के लिए 2004 में मध्य रेल की इंजीनियरिंग दक्षता शील्ड भी प्राप्त हुई थी।

मध्य रेल पर महाप्रबंधक के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है.

स्वागत

हमारे नए उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

श्री मनीष सिंह भारतीय रेल कार्मिक सेवा के माध्यम से दिनांक 21 अगस्त, 2009 को रेल सेवा में नियुक्त हुए। आप प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि, दृढ़ निश्चयी, कर्तव्यनिष्ठ, ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी तथा हिंदी प्रेमी और एक कुशल वक्ता हैं। आपकी रेल सेवा सहायक कार्मिक अधिकारी के पद से आरंभ हुई। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के लामडिंग मण्डल में सर्वप्रथम आपने पदभार ग्रहण किया। मूलतः कानपुर के निवासी आप आरंभ से ही विद्यार्जन में अग्रणी रहे हैं।

हिंदी से आपका नाता आरंभ से ही गहरा रहा है। भारतीय रेल कार्मिक सेवा की परीक्षा भी आपने हिंदी माध्यम से ही उत्तीर्ण की है, जो सभी हिंदी प्रेमी परीक्षार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। हिंदी भाषा में सराहनीय कार्य करने के लिए आपको राजभाषा संबंधित रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार (आधार वर्ष 2020) से भी सम्मानित किया गया है।

वर्तमान में आप प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी कार्यालय, मध्य रेल में उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (मानव संसाधन विकास) के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा उप महाप्रबंधक (राजभाषा) का अतिरिक्त प्रभार भी आपको सौंपा गया है।

आपके बहुमुखी प्रतिभा युक्त मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग निश्चित उल्लेखनीय प्रगति करेगा।

हार्दिक स्वागत।

मुंशी प्रेमचंद

संकलन

धनपतराय श्रीवास्तव (31 जुलाई 1880 – 8 अक्टूबर,1936) जो **प्रेमचंद** नाम से जाने जाते हैं, वे हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपने दौर की सभी प्रमुख उर्दू और हिन्दी पत्रिकाओं जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा। उन्होंने हिन्दी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती प्रेस खरीदा जो बाद में घाटे में रहा और बंद करना पड़ा। प्रेमचंद फिल्मों की पटकथा लिखने मुंबई आए और लगभग तीन वर्ष तक रहे। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे। महाजनी सभ्यता उनका अंतिम निबन्ध, साहित्य का उद्देश्य अन्तिम व्याख्यान, कफन अन्तिम कहानी, गोदान अन्तिम पूर्ण उपन्यास तथा मंगलसूत्र अन्तिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है।

1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें उस दौर के समाजसुधार आन्दोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आन्दोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। हिंदी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है।

प्रेमचंद (प्रेमचन्द) की आरम्भिक शिक्षा फारसी में हुई। प्रेमचंद के माता-पिता के सम्बन्ध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "जब वे सात साल के थे, तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। जब पन्द्रह वर्ष के हुए तब उनका विवाह कर दिया गया और सोलह वर्ष के होने पर उनके पिता का भी देहान्त हो गया। अपने शादी के फैसले पर पिता के बारे में लिखते हैं की "पिताजी ने जीवन के अंतिम वर्षों में एक ठोकर खाई और स्वंय तो गिरे ही, साथ में मुझे भी डुबो दिया और मेरी शादी बिना सोचे समझे करा दिया|"

इस बात की पुष्टि रामविलास शर्मा के इस कथन से होती है कि- "सौतेली माँ का व्यवहार, बचपन में शादी, पण्डे-पुरोहित का कर्मकाण्ड, किसानों और क्लर्कों का दुखी जीवन-यह सब प्रेमचंद ने सोलह साल की उम्र में ही देख लिया था। इसीलिए उनके ये अनुभव एक जबर्दस्त सचाई लिए हुए उनके कथा-साहित्य में झलक उठे थे।" उनकी बचपन से ही पढ़ने में बहुत रुचि थी। 13 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्म-ए-होशरुबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार, मिर्ज़ा हादी रुस्वा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। उनका पहला विवाह पंद्रह साल की उम्र में हुआ। 1906 में उनका दूसरा विवाह शिवरानी देवी से हुआ जो बाल-विधवा थीं। वे सुशिक्षित महिला थीं जिन्होंने कुछ कहानियाँ और प्रेमचंद घर में शीर्षक पुस्तक भी लिखी। उनकी

तीन सन्ताने हुईं-श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "1910 में अंग्रेज़ी, दर्शन, फ़ारसीऔर इतिहासलेकर इण्टर किया और 1919 में अंग्रेजी, फ़ारसी और इतिहास लेकर बी. ए. किया। 1919में बी.ए. पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

1921 में असहयोग आन्दोलनके दौरान महात्मा गाँधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने लेखन को अपना व्यवसाय बना लिया। मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में वे संपादक पद पर कार्यरत रहे। इसी दौरान उन्होंने प्रवासीलाल के साथ मिलकर सरस्वती प्रेस भी खरीदा तथा हंस और जागरण निकाला। प्रेस उनके लिए व्यावसायिक रूप से लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। 1933 में अपने ऋण को पटाने के लिए उन्होंने मोहनलाल भवनानी के सिनेटोन कम्पनी में कहानी लेखक के रूप में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिल्म नगरी प्रेमचंद को रास नहीं आई। वे एक वर्ष का अनुबन्ध भी पूरा नहीं कर सके और दो महीने का वेतन छोड़कर बनारस लौट आए। उनका स्वास्थ्य निरन्तर बिगड़ता गया। लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।

प्रेमचंद साहित्य की वैचारिक यात्रा आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख है। सेवासदन के दौर में वे यथार्थवादी समस्याओं को चित्रित तो कर रहे थे लेकिन उसका एक आदर्श समाधान भी निकाल रहे थे। १९३६ तक आते-आते महाजनी सभ्यता, गोदान और कफ़न जैसी रचनाएँ अधिक यथार्थपरक हो गईं, किंतु उसमें समाधान नहीं सुझाया गया। अपनी विचारधारा को प्रेमचंद ने आदर्शोन्मुख यथार्थवादीकहा है। इसके साथ ही प्रेमचंद स्वाधीनता संग्राम के सबसे बड़े कथाकार हैं। इस अर्थ में उन्हें राष्ट्रवादी भी कहा जा सकता है। प्रेमचंद मानवतावादीभी थे और मार्क्सवादीभी। प्रगतिवादी विचारधारा उन्हें *प्रेमाश्रम* के दौर से ही आकर्षित कर रही थी। प्रेमचंद ने १९३६ में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन को सभापति के रूप में संबोधन किया था। उनका यही भाषण प्रगतिशील आंदोलन के घोषणा पत्र का आधार बना।[23]इस अर्थ में प्रेमचंद निश्चित रूप से हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक कहे जा सकते हैं।

आपको एक और रोचक बात बताते हैं, "हंस" के संपादक प्रेमचंद तथा कन्हैयालाल मुंशीथे। परन्तु कालांतर में पाठकों ने 'मुंशी' तथा 'प्रेमचंद' को एक समझ लिया और 'प्रेमचंद'- 'मुंशी प्रेमचंद' बन गए।

मुंशी प्रेमचन्द की 143वीं जयंती पर उनको शत शत नमन।

सुरक्षित दूरी

विपिन पवार

‘सारु अब तक स्टेशन नहीं पहुंचा।‘

‘आप सारू को नहीं जानते न ?’

सारु यानि सारांश त्रिपाठी.. मेरा जिगरी यार । हम दोनों शुरू से ही एक ही स्कूल में पढ़ते थे.......... दक्षिण मुंबई में कुलाबा के होली नेम स्कूल में । होली नेम हाई स्कूल हम दोनों के घर के नजदीक पड़ता था। मैं शहीद भगत सिंह मार्ग पर कुसरोबाग कॉलोनी में रहता था तो सारु कुलाबा मार्केट में, अम्मूमियां सब्जीवाले के बाजू में जो पतली सी गली है न, जो सड़क से दिखाई भी नहीं देती, उसके आखिरी सिरे पर रहता था। एक कमरे के मकान में.......... खोली में । उनका दूध का कारोबार था........ दादाजी के जमाने से। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से भागकर मुंबई आ गए थे.. ...... सब कुछ छोड़-छाड़कर ।

कुसरोबाग में रहने के कारण स्कूल में आम लड़के मुझसे कटे-कटे से रहते थे। सबको लगता था कि पारसी लोग तो बहुत ही अमीर होते हैं। उस दिन विक्टर का कम्पास बॉक्स चोरी हो गया, तो मॉनिटर हरजीत ने मेरा नाम लगा दिया। इससे पहले कि जूली मिस मेरी पिटाई प्रारंभ करती, सारु अपनी कॉपी लेकर मिस के पास पहुँच गया और कॉपी में कुछ पढ़ते ही मिस ने मेरी पिटाई का प्रोग्राम अचानक स्थगित कर दिया। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया कि आखिर माजरा क्या है ? यह तो हमारी पक्की दोस्ती होने के बाद मुझे बाद में पता पता कि लंच टाइम में सारु ने हरजीत को विक्टर का कंपास उठाते देख लिया था और मेरी पिटाई का प्रोग्राम शुरू होने की बारी आई तो सारु कुछ डिफिकल्टी पूछने के बहाने से जूली मिस के पास चला गया और अपनी कॉपी में लिख कर ले गया कि कंपास हरजीत ने चुराया है। उसने खुद देखा है। पिटने से बचने की खुशी से ज्यादा खुशी इसलिए हुई थी कि लड़कियों के सामने इज्जत बच गई, जिसकी परवाह मुझे हमेशा रहती थी।

' बख़्तू.............।

‘’मैं बिल्कुल नहीं चौका। यह आवाज तो मैं बेहोशी की हालत में भी पहचान सकता हूँ। बख और फिर तू............. को लंबा खींचकर तो सारु ही बोलता है और उसकी उस तू ssssss में जो मिठास गर्मजोशी और दुलार है, उसका मैं कायल है।

"साले सारु । तू अब आ रहा है, जब गाड़ी छूटने वाली है।" मैंने उसकी पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा।

''छूटने वाली है.....अरे ! अभी तो 04.50 ही हुआ है और गाड़ी 05:10 पर रवाना होती है। तुमलोग कब पहुंचे?" सारु अपनी आदत के मुताबिक वह लापरवाही से बोला ।

"देख सारु तुझे तो पता ही है कि पप्पा कहीं भी समय से एक घंटा पहले पहुँचते हैं। स्टेशन हो, सिनेमा हो, सर्कस हो, ड्रामा हो, बर्थडे हो, शादी हो, पार्टी हो, वोटिंग हो, अस्पताल हो या मौत-मट्टी हो। हम तो 04.10 पर यहाँ पहुंच गए थे।

''अच्छा ! अब सब लोग ठीक से बैठ गए न ?''

सारु ने बख्तू का पीएनआर 139 पर चेक कर लिया था। कोच नंबर सी 3 पी 1 बख्तावर मिस्त्री एम 33 सीट नम्बर 54 ।

''अरे ! तुझे तो तेरी पसंद की विंडो सीट मिली है बख़्तू।

02123 डाउन मुंबई पुणे डेक्कन क्वीन अपने निर्धारित समय 05 बजकर 10 मिनट पर प्लेटफॉर्म क्रमांक आठ से रवाना होने को तैयार है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपने निर्धारित स्थान पर बैठ जाएं। चलती गाड़ी पकड़ने का प्रयास न करें। यह खतरनाक है। हम आपकी सुरक्षित एवं सुखद यात्रा की कामना करते हैं। ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ।

उद्‌घोषणा अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि सारु ने बख्तू को गले लगा लिया ।

''तुम बाबा जी लोग भी ना अपनी बिरादरी में किसी को भी शामिल ही नहीं करते। वरना तेरी सगाई और शादी मेरे बिना हो जाए !

बख्तू कुछ भी नहीं बोल पाया, बस मुस्कुराकर रह गया। बख़्तू जब मुस्कुराता था तो उसकी मुस्कुराहट होठों के कोनों से हौले से फिसलकर ठुड्डी पर आकर ठहर जाती थी और सारु को लगता था कि वह बख़्तू के होठों के कोने पकड़कर उस मुस्कुराहट को वहीं क्यों नहीं चिपका पाता ?

कोच में बख्तू के माता पिता के अलावा सात महिलाएं एवं पांच पुरुष रिश्तेदार भी थे जो रूपिया पेरवनु यानि सगाई के लिए जरूरी है क्योंकि सगाई में पांच या सात महिलाएं अवश्य होनी चाहिए | लेकिन नौ से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

'' बख्तू की सीट पप्पा के बगल में ही थी। तीन सीटों वाली कतार में बीच में पप्पा खिड़की वाली सीट पर वह और पापा की बाईं ओर एक सहयात्री अधेड़ आयु का सिर पर बालों की फसल उखड़ चुकी थी। इस कोरोना काल में बस इतना ही तो दिखाई देता है बाकी चेहरा तो मास्क की आड़

में छिप जाता है। डेक्कन क्वीन में आम तौर पर अपरिचित सहयात्री वार्तालाप का सिलसिला प्रारंभ नहीं करते, पर मैं देख रहा था कि पप्पा के बगल में बैठे सज्जन पता नहीं क्यों पप्पा से बात करने को उतावले से दिखाई दे रहे थे। गाडी चिंचपोकली से निकल रही थी।

अब दादर आएगा । चाय वाला बगल से गुजर रहा था। उस सज्जन ने चाय ले ली और पापा से पूछा ''अंकल आप चाय लेंगें ?

''जी नहीं !शुक्रिया । '' पप्पा बस मुस्कुराकर रह गए। चाय पीने के बाद उसकी उत्कंठा से भरी आंखें एवं कुछ कहने को बेताब होठों को देखकर मैं समझ गया कि अब यह दूसरा सवाल दागेगा और हुआ भी यही ।

''माफ कीजिएगा, आप कहाँ तक जाएंगे ।

हालांकि ये सवाल बेतुका था।

आमतौर पर डेक्कन क्वीन के यात्री पुणे ही जाते हैं, इक्का दुक्का लोनावला । पूना को पुणे कहना अभी तक पप्पा की आदत में शुमार नहीं हो पाया था। वैसे पप्पा बहुत बोलते हैं। मशीन स्टार्ट होने में थोड़ा समय लेती है लेकिन एक बार जब चालू हो जाती है तो फिर रुकने का नाम ही नहीं लेती। मुझे अंदेशा हो चला था कि अब पप्पा की ट्रेन का इंजन चालू होने ही वाला था। पहलू बदलकर उन्होंने इंजन को फर्स्ट नॉच पर डाला और शुरू हो गए।

''आप भी शायद पूना ही जाएंगे नां ?

''हां। जी हाँ । मैं पुणे ही जाऊंगा।''

''आप क्या करते हैं।''

'' मैं लेखक हूं ।''

''अच्छा ! नहीं मेरा मतलब था नौकरी । धंधा पानी । घर पर कैसे चलता है।

''आप क्या करते हैं ?

''उसने प्रश्न का उत्तर न देकर प्रश्न ही दाग दिया।''

'' मैं तो पुजारी हूं ''

''जब पूजा से घर चल सकता है तो लेखन से क्यों नहीं। आप रहते कहां हैं । बॉम्बे या पूना।अपनी बात को कटते देखकर पप्पा ने विषय बदलने का असफल प्रयास किया।

'' मैं पुणे में रहता हूं ''

'' मास्क नाक के नीचे सरकाते हुए सहयात्री ने कहा । ''

'' वैसे यदि आप बुरा ना माने तो मैं आप लोगों के बारे में सबकुछ जानना चाहूँगा यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो।''

'' पप्पा ने मुस्कुराते हुए मेरी ओर इशारा किया।''

'' यह बख्तावर है मेरा बेटा। हम इसकी शादी करने पुणे जा रहे हैं।''

'' नहीं ! मेरा मतलब यह नहीं था।''

'' उसने पापा की बात काटते हुए कहा- मैं पारसी लोगों के बारे में सबकुछ जानना चाहता हूँ। कहीं कुछ पढ़ने, जानने, सुनने को नहीं मिलता ना।''

'' अच्छा-अच्छा बताता हूँ ।''

पप्पा का उत्साह तो देखते ही बनता था। मैंने खिडकी से गर्दन घुमाकर देखा दादर जा चुका था। रेलवे का माटुंगा वर्कशॉप दिखाई दे रहा था।

किसी जमाने में प्राचीन फारस जिसे आज हम ईरान कहते हैं, पूर्वी यूरोप से मध्य एशिया तक फैला हुआ एक विशालाकाय साम्राज्य था। तब पैगम्बर जरथुस्त्र ने एक ईश्वरवाद ज्ञान का संदेश देते हुए पारसी पंथ की नींव रखी। जरथुस्त्र एवं उसके अनुयायियों के बारे में विस्तृत इतिहास ज्ञात नहीं है। कारण यह कि पहले सिकंदर की फौजों ने तथा बाद में अरब के जिहादी आक्रमणकारियों ने प्राचीन फारस का लगभग सारा मजहबी एवं सांस्कृतिक साहित्य नष्ट कर डाला था। आज हम इसके इतिहास के बारे में जो कुछ भी जानते हैं वह ईरान के पहाड़ों में उत्कीर्ण शिलालेखों तथा वाचिक परंपरा की बदौलत है।

''मैंने महसूस किया कि लेखक के अलावा कई जोड़ी कान एवं कई जोड़ी आंखें पप्पा से जुड़ चुकी हैं।''

''सातवीं सदी तक आते-आते फारसी साम्राज्य अपना पुरातन वैभव तथा शक्ति गंवा चुका था। जब अरबों ने इस पर निर्णायक विजय प्राप्त कर ली तो अपने पंथ की रक्षा हेतु अनेक जरथोस्त्री धर्मावलंबी समुद्र के रास्ते भाग निकले और नावों से हजारों कोस सफर करके भारत के पश्चिमी किनारे पर पहुंचे और उन्होंने मुंबई - सूरत सेक्शन में मुंबई से 145 किलोमीटर की दूरी पर स्थित संजान नाम

के एक छोटे से गांव में शरण ली। संज्ञान के राजा जाधव राणा ने हमें शरण दी । फारस से आने के कारण हम फारसी अर्थात पारसी कहलाए।''

'' गुरुजी, गुरुजी, कहते हुए एक लड़का तेजी से अपनी सीट से उठा और हमारे नजदीक आकर कहने लगा कि मैंने इस बारे में एक कहानी सुनी है ।

''पप्पा ने उसे डांट डपट दिया।''

''हां हां सुना रहा हूँ बीच में मत बोलो। ''

'' जब हम लोग राजा के दरबार में पहुंचे तो हमें न तो गुजराती आती थी और ना ही राजा को हमारी भाषा। राजा ने गुजराती में नाराजी से कुछ कहा जिसका अर्थ हमने यह लगाया कि हमारे देश में वैसे ही स्थान एवं संसाधन कम हैं। आप लोगों को भी यहाँ परेशानी होगी और हमें भी।''

पापा थूक निगलने को पल भर रुके।

''तब हमारे मुखिया ने एक कटोरे में दूध लिया, उसको लबालब भर दिया किनारों तक, फिर उसमें चीनी डाली और मिलाकर राजा के हाथ में थमा दिया। निहितार्थ स्पष्ट था। डिगरा यही कहानी सुनना चाहता था ना, पप्पा ने जानना चाहा लेकिन वह लड़का जवाब देता इसके पहले ही एक प्रोफेसर सी लगने वाली मॉड महिला बीच में बोल पड़ी। बिल्कुल सच कहा आपने बाबाजी आपने भारत की तरक्की में चार चाँद लगाए हैं। आप लोग यहाँ रह-बस गए, घुल मिल गए भारत के नवनिर्माण में जमशेदजी टाटा का योगदान सर्वोपरि है और आप दूध में शक्कर की तरह घुल तो गए लेकिन आपने अपनी सभ्यता और संस्कृति को आज भी बनाए रखा है। गाड़ी कुछ धीमी हो गई थी, देखा, कल्याण निकल रहा ज्ञा, शाम दबे पांव धीरे धीरे डिब्बे में प्रवेश कर रही थी जैसे कोई किशोरी अपने प्रेमी से मिलकर आने के बाद सबसे नजरें बचाकर धीरे से घर में प्रवेश कर रही हो। अब तो यह गाड़ी सीधे कर्जत ही रुकेगी। वहाँ पीछे से बिजली के दो तीन इंजन लगेंगे और गाड़ी को ढ़केलकर पहाड़ के उस पार लोनावला तक पहुंचाएंगे। जब सामने बैठे दम्पति में से उस भद्र महिला ने यह कहा कि हम लोग गॉड को जेहोवाह और उसके बेटै को जीसस कहते हैं। आप लोग गॉड को क्या कहते हैं - तब मुझे पता लगा कि वे ईसाई है। अहुरा सजदा अर्थात महान जीवनदाता लेकिन अहुरा सजदा कोई व्यक्ति नहीं बल्कि शक्ति है शक्ति है ऊर्जा है । जरथुस्त्र के दर्शनानुसार विश्व में दो आद्य आत्माओं के बीच निरंतर संघर्ष जारी है। इनमें एक है अहुरा सजदा की आत्मा स्पेंता मैन्यू । दूसरी है दुष्ट आत्मा अंघरा मैन्यू । इस दुष्ट आत्मा के नाश हेतु ही अहुरा मजदा ने अपनी सात कृतियों यथा आकाश, जल, पृथ्वी, वनस्पति, पशु, मानव एवं अग्नि से इस भौतिक विश्व का सृजन किया गया।

'' सी वन से सी फोर के चारों एसी सवारी डिब्बों के टिकटों की जांच करने के बाद कोच कंडक्टर अपनी सीट पर बैठने की बजाय पप्पा की बातें सुनने के लिए हमारे पास आकर खड़ा हो गया था। उसकी आंखे चार्ट पर गड़ी थी। यह दिखाने के लिए कि उसे इस बातचीत में कोई रुचि नहीं है लेकिन उसका पूरा ध्यान पप्पा की ही ओर था। अहुरा मजदा की सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य की इस संघर्ष में केंद्रीय भूमिका है। उसे स्वेच्छा से इस संघर्ष में बुरी आत्मा से लोहा लेना है। इस युद्ध में उसके अस्त्र होंगे अच्छाई, सत्य, शक्ति, भक्ति,आदर्श एवं अमरत्व । इन सिद्धांतों पर अमल कर मानव अंततः विश्व की तमाम बुराई को समाप्त कर देगा। कर्जत आ चुका था।बड़ा पाव बेचने वाले कोच के अंदर तक घुस आए थे। माँ ने, जो पिछली सीटों पर मेरी नी बहनों एवं बुआओं के साथ बैठी थी, थर्मस से मग में कॉफी निकालकर पप्पा के हाथ में थमा दी थी तब तक पप्पा गटक चुके थे।

''हां तो फिर ये ईसाई महिला के पति थे।''

'' पापा कुछ बोलते उससे पहले में शुरू हो गया ।''

''देखिए मेरा तो यह मानना है कि स्पेंता मैन्यू कोई आत्मा नहीं है बल्कि सवृद्धिशील, प्रगतिशील मन अथवा मानसिकता है। घर पर सारे धार्मिक ग्रंथ तो मैं बचपन से पढ़ता आ रहा था लेकिन रेलवे में फार्मासिस्ट होने के कारण मेरी दृष्टि अधिक वैज्ञानिक थी और यह अहुरा मजदा का एक गुण है। मैंने बात को आगे बढ़ाया देखा पापा भी ध्यान से सुन रहे थे। वह गुण जो ब्रह्मांड का निर्माण एवं संवर्धन करता है। ईश्वर ने स्पेंता मैन्यू का सृजन इसलिए किया था कि एक आनन्ददायक विश्व का निर्माण किया जा सके। प्रगतिशील मानसिकता ही पृथ्वी पर मनुष्यों को दो वर्गों में बांटती है। सदाचारी, जो विश्व का समर्थन करते हैं तथा दुराचार, जो इसकी प्रगति को रोकते हैं। जरथुस्त्र चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर तुल्य बने, जीवनदायी ऊर्जा को अपनाए तथा निर्माण, संवर्धन एवं प्रगति का वाहक बनें। यदि उसे याद आया कि माधव सरोके समय अपने संदेश में पप्पा ने कहा था अच्छा आप नहीं जानते कि माधव सरोके क्या होता है । विवाह की पूर्व रस्मों या रीति रिवाजों में माधव सरोके का बड़ा महत्व है जो 4 दिन पहले मनाया जाता है, वर और वधू के परिवार वाले गमले में आमतौर पर आम का एक पौधा लगाते हैं। आम के स्थान पर और कुछ भी हो सकता है पर ज्यादातर आम ही लगाया जाता है यह प्रजनन क्षमता का प्रतीक है। परिवार के पुजारी द्वारा कुछ पूजा-पाठ किया जाता है। पौधे को शादी के बाद आठवें दिन तक सींचा जाता है और फिर जमीन में कहीं लगा दिया जाता है। तो पप्पा ने इस अवसर पर कहा था कि विश्व एक नैतिक व्यवस्था है। इस व्यवस्था को हमें कायम ही नहीं रखना है बल्कि अपना विकास एवं संवर्धन भी करना है। हमारे पंथ में जड़ता की अनुमति नहीं है।

''विकास की प्रक्रिया में बुरी ताकतें बाधा पहुंचाती है, परंतु मनुष्य को इससे विचलित नहीं होना है। उसे सदाचार के पथ पर कायम रहते हुए सदा विकास की दिशा में बढ़ते रहना है। गाड़ी रुक चुकी थी। मंकी हिल स्टेशन था। केबिन आ गई थी। यह पहाड़ की चोटी पर है। यहां से उतार शुरू होता है । दिन के समय गाड़ी रुकते ही दोनों ओर बंदरों की फौज इकट्ठा हो जाती है क्योंकि यात्री उनके लिए खिड़कियों से खाद्य सामग्री फेंकते रहते हैं। मुझे लगा कि पप्पा सो चुके हैं। उनकी आंखें बंद थी। लेकिन बाद में पता चला कि मेरी बातें बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। मेरे चुप होते ही बोल पड़े ।''

''जीवन के प्रत्येक क्षण का एक निश्चित उद्देश्य है यह कोई अनायास ही शुरू होकर अनायास ही समाप्त हो जाने वाली चीज नहीं है। सब कुछ ईश्वर की योजना के अनुसार होता है। सर्वोच्च अच्छाई ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। मनुष्य को अच्छाई से अच्छाई द्वारा अच्छाई के लिए जीना है। हुमत (सदविचार) है, उम्त (शब्दवाणी) तथा हुवर्षत (सदकर्म) जरिथोस्त्री जीवन पद्धति के आधार स्तंभ है। मुझे लगता है कि आपकी जीवन शैली पर फिरंगियों का प्रभाव कुछ अधिक ही है।''

''मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव सा दिखने वाला एक युवक शायद बहुत देर से पप्पा के चुप रहने का इंतजार कर रहा था।''

'' हो सकता है शायद इसीलिए हमारे धर्म में मठवाद ब्रम्हचर्य, व्रत-उपवास, आत्मदमन आदि की बिल्कुल मनाही है। ऐसा माना गया है कि इनसे मनुष्य कमजोर होता है और बुराई से लड़ने की उसकी ताकत कम हो जाती है। निराशावाद एवं अवसाद को तो पाप का दर्जा दिया गया है। जरथुस्त्र चाहते थे कि मानव विश्व का पूरा आनंद उठाएं । खुश रहे। वह जो भी करें बस एक बात का ख्याल अवश्य रखें और वह यह कि सदाचार के मार्ग से कभी विचलित ना हो। पप्पा इसलिए रुक गए क्योंकि गाडी लोनावला स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। लोनावला उतरने वाले कुछ यात्री अपना सामान लेकर दरवाजे तक पहुंच चुके थे लेकिन वह उतर पाते, उसके पहले ही चिक्की बेचने वाले लड़के डिब्बे में घुस चुके थे। गाड़ी मलवली स्टेशन से गुजर रही थी। वह बहुत दूर बाईं ओर दिखाई दे रही सहयाद्री पर्वत श्रृंखला में स्थित मां एकविरा देवी के मंदिर पर जलती लाइट को देख रहा था। अब लगभग पूरा डिब्बा ही बड़े मनोयोग से पप्पा की बातें सुन रहा था।''

''हमारे यहां भौतिक सुख-सुविधाओं से संपन्न जीवन जीने की मनाही नहीं है। लेकिन यह भी कहा गया है कि इस समाज से तुम जितना लेते हो, उससे अधिक उसे दो। किसी का हक मारकर या शोषण करके कुछ पाना दुराचार है । जो हम से कम संपन्न है, उनकी सदैव मदद करनी चाहिए। ''

''मौत और आत्मा के बारे में आप क्या कहते हैं ?कहते हुए एक तिलकधारी सज्जन अपनी सीट से उठकर खड़े हो गए।''

'' हमारे यहां दैहिक मृत्यु को बुराई की अस्थाई जीत माना गया है । इसके बाद मृतक की आत्मा का इंसाफ होगा। यदि सदाचारी हुई तो आनंद व प्रकाश में वास पाएगी और यदि दुराचारी हुई तो अंधकार व नैराश्य की गहराइयों में जाएगी लेकिन दुराचारी आत्मा की यह स्थिति भी अस्थाई है। आखिर विश्व का अंतिम उद्देश्य अच्छाई की जीत को मानता है बुराई की सजा को नहीं जरथोस्त्री।

'' यह मान्यता है कि अंततः कई मुक्तिदाता आकर बुराई पर अच्छाई की जीत पूरी करेंगे, तब अहुरा मजदा असीम प्रकाश के रूप में सर्व समर्थवान होंगे। फिर आत्माओं का अंतिम फैसला होगा इसके बाद शरीर का पुनरुत्थान होगा तथा उसका अपनी आत्मा के साथ पुनर्मिलन होगा। समय का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा और अहुरा मजदा की सात कृतियां शाश्वत धन्यता में एक साथ आ मिलेंगी और आनंदमय अनश्वर अस्तित्व को प्राप्त करेगी। पप्पा ने एक सांस में अपनी बात समाप्त की।''

''अब डेक्कन क्वीन पुणे स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक एक पर रुक चुकी थी। अनेक लोगों ने पप्पा से हाथ मिलाया कईयों ने पैर छुए। पता एवं फोन नंबर लिया। स्टेशन पर तनाज़ के पिता परवेज़ तथा मां गुलशन के अलावा अन्य संबंधियों के साथ ही उसके पेदार बोजोर्ग तथा मादरबोजोर्ग अर्थात दादा-दादी भी उनकी अगवानी करने के लिए आए हुए थे। पुणे के लुल्ला नगर में पारसी कॉलोनी तक पहुंचने में हमें लगभग 1 घंटे का समय लग गया । आज ट्रैफिक कुछ ज्यादा ही था।''

'' दूसरा दिन रूपया पेरवनु यानी सगाई का दिन था। शाम को जब हम तनाज़ के घर पहुंचे तो उसकी मां गुलशन ने अपने दरवाजे पर हमारा स्वागत किया और उसकी मौसी एक चांदी की ट्रे लेकर आई जिसमें पानी की केटली, कुछ चावल, चीनी मिट्टी का बर्तन, गुलाब की पंकुड़ियां, एक कच्चा अंडा, एक नारियल तथा कुछ सूखे खजूर करीने से रखे गए थे। मौसी ने अपने हाथ में अंडा लिया और मेरे सिर के चारो ओर पहले घड़ी की दिशा में छः बार फिर घड़ी की विपरीत दिशा में छ: बार घुमाकर जमीन पर पटककर तोड़ दिया। यही प्रक्रिया नारियल के साथ भी दोहराई गई। सगाई की सारी रस्में होने तक में पलक तनाज़ को निहार रहा था। तनाज़ बाटलीवाला कितनी सुंदर थी। कितनी कोमल, कितनी नरम, उसका अंग-प्रत्यंग कोमलता से भरा हुआ था | बिल्कुल अपने नाम की तरह तनाज़ अर्थात कोमलांगी । खाना बेहद लजीज़ था। धनसक खीमा पाव और बाद में मेरा पसंदीदा एप्पल पाय और चॉकलेट माउस । शादी की सारी रस्में यानी हथेवारो नाहन आदि पूर्ण विधि-विधान के साथ संपन्न हुई। रिसेप्शन कोरथिंन क्लब में संपन्न हुआ। मेरे ससुर परवेज़ बाटलीवाला टाटा मोटर्स में काम करते थे लेकिन कोरोना के प्रतिबंधों के कारण मेहमानों की तादाद अधिक नहीं थी। खाने में पारंपरिक पारसी

व्यंजनों मटन बेरी पुलाव, चिकन फरचा, सॉसनी मच्छी, सल्लीबोटी के अलावा शाकाहारी भोजन की व्यवस्था भी की गई थी क्योंकि एक तो मेरे भायखला के बहुत से मित्र शाकाहारी थे और दूसरे तनाज़ के सेंट हेलेना हाई स्कूल एवं ससुर जी के टाटा मोटर्स के बहुत से लोग भी शाकाहारी थे। रिसेप्शन देर रात तक चलता रहा। रात हम सबको यही रहना था। सुहाग कक्ष ऊपरी मंजिल पर था। तनाज़ की सहेलियों की चहलबाजी के चलते कब रात का 1:00 बज गया पता ही नहीं चला। थकान के मारे हम दोनों का बुरा हाल था। शादी के जोड़े में ही कमर सीधी की। मैं सोफे पर ही लुढ़क गया। बाद में पता ही नहीं चला कि कब हम गहरी नींद के आगोश में समा गए। सुबह जब लगातार बज रही कॉल बेल से दोनों की नींद खुली तो दिन काफी चढ़ आया था। अरे ! आज तो आशीर्वाद लेने उदवाड़ा जाना है। याद आते ही वह फौरन बाथरूम में घुस गया । शॉवर के नीचे नहाते हुए वह सोच रहा था कि कल रात सुहागरात मन जाती तो दिल के सारे अरमान पूरे कर लेता, लेकिन खैर । उदवाड़ा पहुंचने के लिए पहले मुंबई पहुंचना था - लिहाजा वह और तनाज़ दोनों उदवाड़ा के लिए रवाना हो गए। दो दिन बाद उदवाड़ा से लौटते ही पता चला कि तनाज़ के पिता परवेज़ कोरोना की चपेट में आ गए हैं। उसने तनाज़ को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन तनाज़ ने कहा कि वह अपने पिता से बेहद प्यार करती है और पिता भी उस पर जान छिड़कते हैं। ऐसी हालत में वह उनकी देखभाल करना चाहती है। उसने तनाज़ को समझाने की बहुत कोशिश की कि यह बीमारी बहुत ही खतरनाक है — संक्रमण का खतरा तो है ही और अभी हाल ही में तो उनकी शादी हुई है और सुहागरात। लेकिन तनाज ने एक न सुनी और वह वसई रोड आते ही ट्रेन से उतर पड़ी। उसे शायद पता था कि यहां से पुणे जाने वाली गाडियां मिलती है। कोरोना ग्रसित रोगियों की सेवा में अपने आपको झोंक देने वाला बख़्तावर चाह कर भी बसई रोड नहीं उतर पाया क्योंकि उसे तो कल सुबह आठ बजे अपनी ड्यूटी पर रेलवे अस्पताल, भायखला पहुंचना था।''

इयूटी पर पीपीई किट पहनने और ड्यूटी के बाद पूरे समय मास्क लगाने, दस्ताने पहनने, घर पहुंचते ही नहाने, पूरे कपड़े धोने, बार-बार हाथ धोने, सैनिटाइजर के फव्वारों से खुद को भिगोने, पौष्टिक भोजन लेने, प्रातः प्राणायाम, कपाल-धौती, अनुलोम-विलोम, योग तथा व्यायाम करने, रोज तुलसी, अदरक, कालीमिर्च, हल्दी का काढ़ा पीने, विटामिन-सी की गोली लेने की सलाह न सिर्फ वह सबको देता रहता था बल्कि खुद भी वह सारी बातों पर अमल करता था। इन दिनों उसका तकिया कलाम बन गया था कि –''बीमारी से सावधानी और सावधानी में ही सुरक्षा है।" वीडियो कॉल की वजह से आजकल बड़ी आसानी हो गई है। प्रायः रोज ही उसकी तनाज़ से बातें हुआ करती थी। फिर दूसरी लहर आई। रोगी बढ़ने लगे। बातों का सिलसिला धीरे-धीरे कम-कम होता हुआ लगभग बंद-सा हो गया। हां संदेशों का आदान-प्रदान चलता रहा।

तनाज़ के पिता को अस्पताल में भर्ती करने की जरूरत ही नहीं पढ़ी। होम क्वारनटाइन में ही वे ठीक हो गए, लेकिन इससे तनाज की मां संक्रमित हो गई और उन्हें फिर से अपने घर में हीं कैद हो जाना पड़ा। तनाज़ में लक्षण दिखाई न देने और कोई तकलीफ न होने के कारण टेस्ट नहीं कराया। हालांकि उसने सेल्फ टेस्टिंग किट पुणे भिजवा दिया था और तनाज़ से कहा था कि वह भी तुरंत अपना टेस्ट करा ले लेकिन तनाज इसके लिए राजी नहीं हुई।

बख़्तावर की कुर्सी के बाईं ओर लगे फार्मास्यूटिकल कंपनी के सुंदर से कैलेंडर के कई पृष्ठ पलटे जा चके थे। बाह्य रुग्ण विभाग में तो रोगी आने से कतराते थे।लिहाजा काम का दबाव थोड़ा कम था तो उसकी नजर स्क्रीन पर गई। यह तनाज़ थी। काम के समय वह मोबाईल को म्यूट कर देता था। उसने साउंड बढ़ाया और तनाज़ से बात करना शुरू कर दिया। उसे जानकर राहत मिली कि अब दोनों की रिपोर्ट निगेटिव आ चुकी है, लेकिन तनाज़ ने अभी भी अपना टेस्ट नहीं किया था। लॉकडाउन में स्कूल तो पूरी तरह से बंद हो चुके थे। ऑन लाइन पढ़ाई जारी थी। रेलगाड़ियाँ, बसें, टैक्सी सब बंद थे।

तनाज़ की स्कूल की एक सहेली तानिया ससून अस्पताल में डॉक्टर थी। एक दिन उसने मैसेज दिया कि वह मुंबई जा रही है। यदि वह चाहे तो उसे सुरक्षित मुंबई पहुंचा सकती है। उसने कई बार बख़्तावर से कहा था कि या तो वह पुणे आ जाएं या उसे मुंबई बुलाने का कोई इंतजाम कर दे लेकिन बख़्तावर संक्रमण की बात कह कर हर बार टाल जाता था। लिहाजा उसने तानिया को रिटर्न मैसेज कर दिया कि वह उसके साथ मुंबई आयेगी ।

निर्धारित समय पर तानिया एम्बुलेंस लेकर उसके घर पहुंच गई। एम्बुलेंस को देखते ही फटाफट आस-पड़ोस की खिड़कियां खुल गई और कानाफूसियों का दौर प्रारंभ हो गया। इससे पहले कि किसी को कुछ जानने-समझने का मौका मिलता। तनाज पीपीई किट पहनकर एम्बुलेंस पर सवार हो गई और पलभर में ही सायरन बजाती हुई एम्बुलेंस मेन गेट से बाहर हो गई और वॉचमैन की यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई कि 507 वाली मास्टरनी को कोरोना हो गया है और हालत ख़राब होने के कारण उन्हें बड़े अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया जा रहा है।

इधर कुसरो बाग के मेन गेट से धड़धड़ाती हुई गार्डन का गोल चक्कर लगाने के बाद एम्बुलेंस डी विंग के सामने रुकी। शाम का समय था। बख़्तावर हाल ही में अस्पताल से लौटा था। डी विंग के तीसरे माले पर अपने बेडरूम की खिड़की से झांककर उसने नीचे देखा कि पीपीई किट पहने एक शख़्सियत पिछले दरवाजे से नीचे उतरी और एम्बुलेंस उसे छोड़कर वापस चल दी। कुसरो बाग की खिड़कियों में ग्रिल न होने के कारण उसे सब कुछ बिल्कुल साफ- साफ दिखाई दे रहा था। उसे लगा

शायद उसके विंग मे कोई पेशेंट ठीक होकर घर वापस आ गया है। उसने चाय की चुस्की ली ही थी कि डोर बेल घनघना उठी, उसने पप्पा को कई बार कहा है कि यह घनघनाने वाली घंटी बदलकर टिंग टांग वाली कोई दूसरी लगवा लें, आदमी अपनी धुन में हो तो इससे क्षणभर के लिए कलेजा थर्रा जाता है, लेकिन पप्पा जरा ऊंचा सुनते हैं, लिहाजा उसने जब इस बारे में बोलना छोड़ दिया है। दरवाजा उसने ही खोला। पीपीई किट के अंदर से झांकती हरी आंखें, पलकों पर अपेक्षाकृत बड़े काले बाल, नाक की नोंक पर काला गोल मस्सा, मदहोश कर देने वाली मुस्कान । तनाज़ वह इतनी जोर से चीखा कि पप्पा-मम्मा दौड़कर उसके पीछे आकर खड़े हो गए। "वॉशरूम किस तरफ है।" पीपीई किट उतारे बिना तनाज़ ने पूछा। उसे अब तक विश्वास नहीं हो रहा था, उसने बाएं हाथ से इशारा कर दिया।

लगभग घंटे भर बाद तनाज वॉशरूम से निकली। नीले लैगहन और क्रोशिये के सफेद टॉप से तनाज़ का यौवन छलक रहा था- "बख़्तावर की रीढ़ की हड्डी में एक सनसनी-सी दौड़ने लगी। उसके अछूते सौंदर्य को अपलक निहार रहे बख़्तावर की तंद्रा तब टूटी जब तनाज़ उसकी आंखों के सामने ऊपर-नीचे अपनी हथेली हिलाने लगी। वह झेंप गया।

"तनाज़ - तुम इस तरह अचानक।''

'' तो क्या बैंडबाजे के साथ आती। "

''तुम तो मेरे आने का कोई इंतजार करने से रहे।" वह समझ नहीं पाया कि उसकी आवाज में उलाहना अधिक है या शिकायत ।

"चलो कोई बात नहीं। तुमने टेस्ट तो कराया होगा। नेगेटिव है न?" उसके दिल की बात जुबान पर आ गई।

"नहीं कराया। तुमने कराया क्या ?" तनाज के स्वर में झुंझलाहट थी।

''मैं क्यों कराऊँ ?" न मम्मा। पापा संक्रमित हुए थे और न मैं? तुम्हारे यहां मम्मा-पापा दोनों कोरोनाग्रस्त थे। '' उसने सफाई दी ।

'' तुम तो मरीजों के बीच मे रहते हो न यदि --- ''कहकर वह उसके नजदीक आने लगी। "

''अच्छा- तुम आराम करो, मुझे कुछ काम करना है।" कहकर वह तेजी से अपने बेडरूम में चला गया और उसने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया।

डिनर पर चारों ने ढेर सारी बातें की। कुसरोबाग की खासियत है कि यहां बिना ग्रिल की बड़ी-बड़ी खिड़कियां हैं। लगभग हर कमरे में बालकनी सहित एक बड़ी खिड़की है। डिनर के बाद तनाज़ ने बालकनी में आकर ऊपर देखा, आसमान में बादल नहीं थे। निरभ्र आकाश में तारे अपनी ड्यूटी पर हाजिर हो रहे थे। उसे लगा कि आज उसकी भी रात तारों से भरी होगी। वह वापिस ड्राइंग रूम में

आकर मम्मा-पप्पा के साथ टीवी देखने लगी। नेटफ्लिक्स पर राजेश खन्ना की फिल्म 'थोड़ी सी बेवफाई' आ रही थी। फिल्म समाप्ति की ओर थी। जम्हाई लेते हुए पप्पा कहने लगे -

देखो ! कभी-कभी गलतफहमियों के कारण रिश्ते किस तरह तबाह हो जाते हैं ।फिल्म समाप्त हुई। मम्मा-पप्पा सोने के लिए अपने बेडरूम में चले गए तो उसने आहिस्ता से अपने बेडरूम के दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद नहीं था, लिहाजा हल्की-सी थाप से खुल गया। देखा बख़्तावर गहरी नींद में है - उसके खर्राटें पूरे कमरे में गूंज रहे थे। ओ माई गॉड ! उसके यहां तो कोई खर्राटें नहीं लेता। उसने बख़्तावर के पास सोने का असफल प्रयास किया फिर उठकर ड्रॉइंगरूम में सोफे पर आ गई और उसे कब नींद ने अपने आगोश में ले लिया, पता ही नहीं चला।

बाद के दिनों में वह यह सोचकर अपने बेडरूम में ही सोने लगी कि कोई एक दिन की बात थोड़े ही है - पहाड़ सी जिंदगी काटनी है उसे इस आदमी के साथ जो उसका पति कहलाता है, खर्राटों के साथ सोने की आदत तो डालनी ही होगी। एक सप्ताह में ही उसे यह महसूस होने लगा कि उसका पति उसके नजदीक आने से, उसे छूने से, उसे प्यार करने से बचता रहता है। पहले तो उसे लगता था कि अस्पताल में काम का दबाव ज्यादा होने के कारण वह थक जाता है, लेकिन सप्ताहांत में उसकी यह आशंका निर्मूल साबित हुई। शनिवार को अस्पताल आधे दिन बाद बंद हो जाता है, लेकिन बख़्तावर शनिवार को भी देर शाम तक ही घर पहुंचा, पूछने पर कहने लगा कि स्टॉक चेकिंग के लिए तो सप्ताह भर समय ही नहीं मिलता इसलिए शनिवार को हम लोग काम पूरा कर लेते हैं।

इतवार को सब लोग फोर्ट स्थित नाजी लिमजी अग्यारी गए। अग्यारी से लौटते समय उसकी सास गुलरुख ने बख़्तावर से कहा- "डिकरा बख़्तू बहू को कहीं घुमाएगा नहीं क्या ?" तब बड़े बेमन से बख़्तावर ने उसे ले जाकर एशियाटिक लाइब्रेरी की सीढ़ियों पर बैठा दिया, उसने देखा वहाँ प्रेमी जोड़े एक-दूसरे से सटकर सेल्फी लेने में व्यस्त है - सबसे ऊपर की सीढ़ी पर प्री-वेडिंग शूट चल रहा है। एक पंजाबी नवविवाहित जोड़ा आलिंगनबद्ध आंखें भींचे लाइब्रेरी के विशाल खंबे से टिका समाधि की अवस्था में है और मेरा बख़्तावर मुझसे सुरक्षित दूरी बनाकर मेरे पास बैठा है। मुझे सामने दिखाई दे रहे हॉर्निमन सर्किल का इतिहास बताने में खोया हुआ है। दोपहर जिम्मी बॉय में लंच लेकर हम पैदल ही फ्लोरा फाउंटेन पहुंच गए और वहां कुछ समय बिताने के बाद चर्चगेट स्टेशन होते हुए पिज्जा बाय द बे के सामने मरीन ड्राइव पर समुद्र की ओर पैर लटकाकर चहारदीवारी पर बैठ गए। लेकिन उतने पास नहीं, जितने पास होना चाहिए। दोपहर का समय है- जनवरी की गुनगुनी धूप- सूरज की तिरछी किरणें लहरों के साथ अठखेलियां करते हुए मादक स्वर लहरियां बिखेर रही हैं। दूर एक मछुआरा लहरों पर हिचकोले खाती नांव पर खड़े होकर अपना जाल खींच रहा है। उसने हौले से अपनी बाईं

हथेली राजभवन की ओर निहार रहे बख़्तावर के दांये हाथ पर रख दी। बख़्तावर ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की लेकिन उसके रोम-रोम में मादक अनुभूति की तरंगे प्रवाहित होने लगी।

"बख्तावर" उसने चुप्पी तोड़ी

''हुं''

"कुछ बोलो न''

"क्या""

" क्या मैं तुम्हें पसंद नहीं?"

"ऐसा तुमसे किसने कहा?"

"कुछ कहना जरूरी होता है क्या?कुछ बातें कही नहीं, समझी जाती है।''

"क्या तुम किसी और को चाहते हो और उससे शादी करना चाहते थे?"

"यार ! तुम बकवास मत करो । ऐसी कोई बात नहीं है।"

"फिर क्या बात है ?शादी के बाद सुहागरात आती है ये तो तुम जानते होंगे ? कि नहीं जानते। एक सप्ताह हो चुका है, तुमने मुझे अब तक छुआ तक नहीं है।"

''देखी तनाज़, वो सब कुछ तो हमें जिंदगी भर करना है। तुम्हारे यहां मम्मा-पप्पा पॉजीटिव थे और फिर तुमने अपना टेस्ट भी नहीं कराया है, क्या पता वायरस तुम्हारे शरीर में आँख मिचौली खेल रहा हो। बस और सात दिनों की ही तो बात है- ये 14 दिनों का क्वारन्टाइन पीरियड बीत जाने के बाद फिर देखना- तुम अपना टेस्ट करा लेना - रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद तो "तुम मेरी सुहागरात देखना, दो-चार दिन तो तुम बिस्तर से हिलने के भी काबिल नहीं रह पाओगी।" कहते हुए बख़्तावर ने दांए हाथ से उसके सिर पर प्यार से एक चपत लगा दी।''

लाज़ से तनाज़ की कनपटियां लाल हो गई -- मन का बोझ उतर गया। छि: वह क्या कुछ सोच रही थी?

अगले सप्ताह के पहले दिन ही तनाज़ को स्कूल से बुलावा आ गया। अब निजी वाहन से पुणे जाने की अनुमति मिल सकती थी। पुलिस पास जारी कर रही थी। वह पास लेकर बुधवार को पुणे रवाना हो गई। डॉ. तानिया किसी काम से अपनी गाड़ी लेकर जे. जे. हॉस्पिटल आई थी, तो वापसी में उसे लेती हुई गई। देर रात पहुंचे तो डॉक्टर तानिया उसे काहुन रोड कैम्प स्थित अपने बंगले पर ले

गई। यह कहकर कि दोनों सहेलियाँ लॉकडाउन के बाद आज पहली बार मिली हैं, जमकर बातें करेंगी।

कयानी के वॉलनट केक का एक टुकड़ा मुंह में डालते हुए डॉ. तानिया ने प्लेट उसकी ओर सरका दी और कहने लगी- "और सुना यार क्या हाल है। तू तो बड़ी बुझी-बुझी सी मुरझाई हुई लग रही है। जबकि अभी तो तेरे खिलने, रंग बिखेरने, खुशबू लुटाने और इंद्रधनुषी सपनों में खोने के दिन है।"

"क्या बताऊं यार तानिया" कहकर उसने एक गहरी सांस ली और सारी हकीकत बयान करने के बाद बोली- " यहां तो बहारों के मौसम में पतझड़ की वीरानी झेल रही हूं"

"अच्छा यह बात है।" डॉ तानिया की हिरनी-सी लंबी आंखे और भी फैल गई थी। उसने शून्य में निहारते हुए बोलना प्रारंभ किया- "देख यार मैं डॉक्टर हूँ- एमडी और तेरा मियां सिर्फी फार्मासिस्ट। वो क्या मुझसे ज्यादा जानता है- मुझे नहीं लगता कि तुझे 14 दिन क्वारेन्टाइन में रहने की जरूरत है। तुममें कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। अब हम चखायेंगे मजा तेरे मियां को। अब देखते जाओ आगे-आगे होता है क्या? चल कल मेरे साथ ससून अस्पताल तेरा टेस्ट कराती हूँ। रिपोर्ट तो नेगेटिव ही आनी है तेरी। फिर ये नेगेटिव रिपोर्ट तेरे मियां को भेज देना और उससे अपनी रिपोर्ट भी भेजने को कहना। डॉ. तानिया ने अपनी योजना पर ख़ुशी से चहकते हुए कहा-

"उसकी रिपोर्ट--- किसलिए ? उसके घर में तो किसी को कोरोना नहीं हुआ और न ही उसे कोई लक्षण है वो तो अस्पताल में काम करने के कारण अपने आप का इतना ध्यान रखता है कि उसे कभी छींक भी नहीं आती।" वह डॉ. तानिया के इस प्रस्ताव से चौंक गई थी।

"हां हां उसे कोरोना नहीं है। तो मैं भी कहाँ उसकी कोरोना टेस्ट रिपोर्ट मांग रही हूं।" डॉ. तानिया ने कुटिलता से मुस्कराते हुए कहा- "मुझे तो उसकी मर्दानगी का सबूत चाहिए।"

"क्या ? तू ये क्या कह रही है तानिया। तनाज़ को अपने पैरों तले की जमीन खिसकने का एहसास हुआ।"

"हां मेरी प्यारी तनाज़ ! मुझे अब पक्का यकीन हो चला है कि तेरा मियां इस काबिल ही नहीं है कि किसी के साथ सुहागरात मना सके, वरना तुझ जैसी ऐसी हसीन, चुलबुली शोख एवं जवान लड़की जिस पर पूरा वाड़िया कॉलेज मरता था, किसी बांके जवान को अपने बिस्तर पर मिल जाए तो वो क्या मुंह फेरकर सो जाएगा। सोचा- मेरी जान ---- सोचो।" उसके मन की उर्वर जमीन में शक का बीज बोकर डॉ. तानिया डिनर की तैयारी करने किचन में घुस गई।

'' अच्छा तो यह बात है। वह सोचने लगी और पीपीई किट पहनकर कुसरोबाग में घुसने से लेकर आज तक की सारी घटनाएं उसकी आंखों के आगे चलचित्र-सी घूमने लगी। घर पहुँचकर उसने सिलसिलेवार सारी बातें अपने मम्मी-पप्पा को बताई तो वे उसके भविष्य के प्रति चिंतित हो उठे।

मामला पारसी पंचायत में पहुंचा। तनाज़ की कोरोना नेगेटिव रिपोर्ट पंचायत को प्रस्तुत की गई। बख़्तावर पूर्ण पुरुष था । उसने खुद आगे आकर अपनी मर्दानगी का सबूत पंचायत के सामने रख दिया। दोनों की आखें चार हुई। उसने मुंह फेर लिया।

पप्पा ने पंचायत को बताया कि अब उनका बेटा तनाज़ के साथ रहने को तैयार नहीं है।

उसका कहना है कि जिस रिश्ते की बुनियाद ही अविश्वास पर टिकी हो, उसे निभाने का कोई मतलब ही नहीं है। पंचायत ने दोनों पक्षों को समझाया कि हमारी कौम तेजी से घट रही है, हमारे तलाक के नियम भी बड़े पेचीदा है, इस मामले में तो तलाक हो ही नहीं सकता, क्योंकि तलाक पर भले ही आप सहमत हो, दूसरा पक्ष सहमत नहीं है, आपसी सहमति नहीं बन रही है तलाक के लिए। लिहाजा दोनों को साथ ही रहना होगा, यही समाज के हित में है।

बख़्तावर और उसके मम्मा-पप्पा ने पंचायत का निर्णय भारी मन से स्वीकार कर लिया, तनाज़ का परिवार तो यही चाहता था। तनाज़ उसे पहले ही बता चुकी थी कि डॉ. तानिया उसकी बचपन की एकमात्र सहेली है, जिसे वह बचपन से अपनी हर बात बताती आ रही है। बख़्तावर ने तनाज़ का हाथ थामते हुए कहा "तनाज़ बधाई हो। तुम नेगेटिव हो और मैं पॉजीटिव हूँ और हां --- डॉ. तानिया वेलडन। '' डॉ. तानिया ने झेंपकर तुरंत अपना मोबाइल ऑन कर दिया।

मुंबई पहुंचने पर तनाज़ की सुहागरात आई और चली गई, लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ, जैसा तानिया ने सोचा था। यह एक नर और मादा शरीर के मिलन के अलावा कुछ नहीं था। समय का पहिया अपनी गति से भागता रहा लेकिन उन दोनों के बीच हमेशा बनी रही एक ----- सुरक्षित दूरी।

सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

मध्य रेल, मुंबई छशिमट

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

चंद्रयान..गौरव गान..!

किशोर एस. कुदरे

चांद पर अब कदम,जम गए हैं हिंदुस्तान के।
दुनिया के नक्शे पे हम,खड़े हैं सीना तान के।।

प्रतिभा पलायन बंद हो तो,सब कुछ संभव है,
प्रतिभा का सम्मान हो तो,सब कुछ संभव है,
उपलब्ध हो विज्ञान सुविधा,सब कुछ संभव है,
पहल हौसलों के संधान की,सब कुछ संभव है,
बार-बार दोहराएंगे फिर,प्रगति-पल अभिमान के...
दुनिया के नक्शे पे हम,खड़े हैं सीना तान के....

हम पर नजरे हैं सबकी,चांद पर हमारी नज़रें,
चांद मिशन से उभरेगी,उन्नति की नई तस्वीरें,
भारत गौरव के सीमाओं की,बढ़ जाएगी लकीरें,
आधुनिक परिवेश की हम,उज्वलता को संवारे,
दुनिया में हैं चर्चे हमारी,उपलब्धि गुणगान के...
दुनिया के नक्शे पे हम,खड़े हैं सीना तान के....

अखंड एकता के प्रतीक है,हम शांति प्रिय हैं,
जोश-होश संघर्ष सटीक है,हम क्रांति प्रिय हैं,
अथक परिश्रम की रीत है,ना क्लांति प्रिय हैं,
संपूर्णता के पथ से प्रीत है,हां उत्क्रांति प्रिय है,
हैं सक्षम होश उड़ाने में,हम चीन पाकिस्तान के...

चांद पर अब कदम,जम गए हैं हिंदुस्तान के।
दुनिया के नक्शे पे हम,खड़े हैं सीना तान के।

वरिष्ठ अनुवादक
महाप्रबंधक कार्यालय,मध्य रेल,
मुंबई छ.शि.म.ट.

मैं अबोध भला क्या जानूं ?

रजनीश दुबे "धरतीपुत्र"

अभी एक वर्ष पूर्व की ही तो बात है जब दीपावली पर्व पर मां अन्नपूर्णा जी के त्रि–दिवसीय दर्शन लाभ हेतु बनारस गया हुआ था, तब श्री बिहारी पुरी मठ जहां हम रुके हुए थे वहां हमारे पुराने सखा पंडित श्री राम नरेश जी भाईसाहब ने आकर कहा, चलो रजनीश जी तुम्हें आज विश्व प्रसिद्ध तीनों लोकों के अधिपति श्री विश्वनाथ जी की शयन आरती में उनके दर्शन करा लाते हैं, मैंने भी आव देखा न ताव चल दिया अपनी बंडी पहन गमछा लपेट कर नंगे पैर बाबा की शरण में, और जैसे ही मंदिर में प्रवेश किया तो ज्ञात हुआ कि अभी आरती में थोड़ा समय है, तो भैया रामनरेश जी के कथनानुसार हम भी बैठ गए मंदिर परिसर में महादेव के जाप मे तल्लीन।

किंतु ध्यान मग्न होते ही आंख मूंदे ऐसी घटनाएं घटित हुई जैसे अब नेत्र खोलने का विचार ही मन में नही आयेगा, क्योंकि ध्यान और ज्ञान के बीच हम उस वापी की दीवार से टिके हुए बैठे थे, और सामने थे महादेव के परम भक्त बाबा नंदीश्वर महाराज, वो समय लगभग 10 बजे का था , जब हमने ज्ञानवापी मंदिर के पुजारी जी का सिंहासन देखा, मन में क्षणिकाएं चमक रही थी, लेकिन जब तक आरती का समय हो गया और हम आरती करने बाबा विश्वनाथ के द्वार पर एक भिक्षुक के समान, एक रोते हुए बालक की मुद्रा में खड़े हुए रहे। तब आरती और उसके जय घोष हुए तो प्रतीत हुआ कि बाबा शयन निद्रा की ओर प्रस्थान करने को जा रहे थे , कि तभी एक जयकारा भगवान विश्वनाथ मंदिर के प्रांगण में उपस्थित भक्तों द्वारा ऐसा भी लगा जिसने हमारे रोंगटे खड़े कर दिए, वो जयकारा था अविमुक्तेश्वर धाम के एकाधिपति महादेव विश्वेश्वर महाराज का।

मानो जयकारा लगते ही देवाधिदेव महादेव का आवरण प्रकाश प्रत्यक्ष भूमंडल प्रांगण में दैदीप्यमान हो गया हो, कुछ पल के लिए मेरा शरीर भूतल से ऊपर उठने लगा, मेरे नेत्र अभी भी मंदिर के शीर्ष को निहारते हुए उन सात दिव्य पक्षियों को टकटकी लगा देख रहे थे जो महादेव की आरती बड़े ध्यान से सुन रहे थे। ऐसा लगा मानों सप्तऋषि स्वयं बाबा की शयन आरती का आनंद ले रहे हो और तभी अंतिम कर्ण भेदी जयकारे के साथ राम नरेश भैया जी ने मेरी देह को जोर से झकझोरा और कहा कि कहां खो गए 'धरतीपुत्र'?

पर ये सत्य है कि मैं अबोध भला क्या जानूं ?

यही बात आपको निम्नलिखित पंक्तियों से बताने का प्रयास कर रहा हूं।

मैं बाबा की शयन आरती के वक्त गया था मंदिर में।
समय था जब तक नहीं हुआ रहा मैं बैठा मंदिर में।।

जिस दीवार से टिका मैं बैठा वही ज्ञान की वापी थी।
ध्यान किया तो अंतर्मन में अजब सी आपा धापी थी।।

कौतुहल था मन विचलित था ध्यान भटकता शनै: शनै:!
श्री पन्ना पंडित जी का आसन जैसे रोता हो छांव तले।।

और वहीं सामने थे नंदी बैठे घूर रहे थे मुझको जब।।
समझ न पाया ध्यान में गलती कैसे हो गई मेरी कब??

तब गजब फुरफुरी तन में मेरे आन पड़ी मैं कांप गया।
हां मैं तप करते नंदी बाबा की करुण वेदना मांप गया।।

जो वर्षों बैठे प्रतिक्षाओं के क्षण क्षण गणित लगाते हो।
कब दीवार हटेगी कहकर भोले का भजन जो गाते हो।।

उन नंदी के जप तर्पण को मां गंगा ने स्वीकार किया।
श्रीपन्ना जी के प्रबल त्याग को बाबा ने स्वीकार किया।।

फिर उठा ध्यान से शयन आरती करने बाबा के सम्मुख।
तो संकेतों में मिला हमें कि आने वाला है मन का सुख।।

जब दसों दिशाओं में कर्ण भेदने वाला जयकारा गूंजेगा।
तो ज्ञान की वापी में भी इक दिन कोई पहेलियां बूझेगा।।

मैं बाबा की शयन आरती के वक्त गया था मंदिर में।
समय था जब तक नहीं हुआ रहा मैं बैठा मंदिर में।।

वर्धमान टैक्सटाइल कंपनी
एकाउंट शाखा
नर्मदापुरम (मध्यप्रदेश)

कर्मयोगी

त्रिपुरारी कुमार

यूँही नहीं मैं कर्मयोगी कहलाता हूँ,

दिनकर तेरी प्रचंड ताप का संताप,

जेठ की दुपहरी ज्वाला का वरण करता हूँ|

पूस की तमस्विनी शीत में ठिठुरता हूँ,

काया को सावन भादो करता हूँ|

तब जाकर मैं कर्मयोगी कहलाता हूँ||1||

प्रगतीशील हूँ पहाड़ो-पठारों पर

गतिशील हूँ नदी-नाले-किनारों पर

चलनशील हूँ जंगल-निर्जन-सुनसानों में

कर्मशील हूँ कर्तव्य पथ पर हर व्यवधानों में

तब जाकर मैं कर्मयोगी कहलाता हूँ ||2||

रिश्ते-नाते बंधु-बांधव का भाव भुलाता हूँ,

खेत-खलिहान गाँव-गली को स्मृतिशेष में लाताहूँ

होली-दिवाली छठ पड़वा गुढ़ीपड़वा मन मसोस कर रह जाता हूँ

तब जाकर मैं कर्मयोगी कहलाता हूँ ||3||

हर्ष-विषाद हार –जीत आपदा-विपदा उत्कृष्ठ सेवा का प्रण करता हूँ

नि:स्वार्थ देश सेवा से सर्वदा सराबोर रहता हूँ

निष्कर्म सेवायोग को ही सर्वोपरि रखता हूँ

तब जाकर मैं कर्मयोगी कहलाता हूँ||4||

मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
पुणे मंडल, मध्य रेल

मेरी दौड़ एक जुनून

मोहम्मद ईस्माइल ईब्राहिम शेख

दौड़ से मेरा पुराना नाता रहा है। मध्य रेल में मैंने अपनी 27 वर्ष की सेवा सफलता पूर्वक पूर्ण कर ली है और अभी मेरी पाँच वर्ष की सेवा शेष है। कल्याण-डोंबिवली रनिंग ग्रुप के रनर्स प्यार से मुझे **फ्लाइंग शेख** के नाम से भी बुलाते हैं। प्रधान मुख्य सिगनल और दूरसंचार इंजीनियर कार्यालय (जहां मैं भी कार्यरत हूं) के मेरे सहकर्मी श्री अपूर्बा दास, एसएसई/टेलीकॉम (जो कि 30 सितंबर, 2023 को रेल सेवा से सेवा निवृत्त हो रहे हैं) ने ही मुझे सर्वप्रथम दौड़ने के लिए प्रेरित किया। श्री अपूर्बा दास भी अद्‌भुत धावक रह चुके हैं।

वर्ष 2016 में मैंने अपने सहकर्मी की प्रेरणा से 46 वर्ष की आयु से दौड़ना शुरू किया, यहीं से मेरी दौड़ यात्रा की शुरूआत हुई। मैंने 15 अगस्त, 2016 को काला तलाव कल्याण पश्चिम में स्वतंत्र रूप से दौड़ना शुरू किया। चार दिनों के रनिंग अभ्यास के बाद, 21/08/2016 को चर्चगेट, मुंबई ओवल ग्राउंड में आईडीबीआई फेडरल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मुंबई द्वारा आयोजित 10 किलोमीटर हाफ मैराथन में मैंने भाग लिया और सफलतापूर्वक 10 किलोमीटर का लक्ष्य पूरा किया, जिसके लिए मुझे मेडल और प्रमाणपत्र दिए गए। दिनांक 11/12/2016 को वसई-विरार मेयर की 21 किलोमीटर की मैराथन दौड़ वसई से विरार में आयोजित की गई। यह मेरी पहली मैराथन दौड़ थी जिसमें हिस्सा लेकर 21 किलोमीटर की दौड़ केवल 2 घंटे 25 मिनट में मैंने सफलतापूर्वक पूरी की,इसके लिए भी मुझे मेडल और प्रमाणपत्र दिए गए।

26 जनवरी, 2020 को मैंने बजाज एलायंस लाइफ प्लैंकथॉन में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में रिकॉर्ड संख्या में लोग एक साथ लगातार एक मिनट तक एब्डोमिनल प्लैंक (पेट को एक साथ रखने) की पोजीशन में रहे।इस पहल के दौरान एमएमआरडीए ग्राउंड्स, बीकेसी, मुंबई में कुल 2471 लोगों ने भाग लेकर सफलतापूर्वक इसे पूर्ण किया, जबकि वर्ष 2018 के नवंबर माह के दौरान पुणे में इस प्रकार की पहल की गई थी जिसमें कुल 2353 लोगों ने भाग लिया था, अतः उनके नाम सर्वाधिक लोगों को जोड़ने का रिकॉर्ड अब तक दर्ज था। इसकी अपेक्षा वर्ष 2020 में हमारे दल में लोगों की संख्या 2471 थी जो कि उनकी संख्या से 118 अधिक है। अतः हमारे दल को संयुक्त एवं व्यक्तिगत रूप से मेडल और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का प्रमाणपत्र दिया गया।

रन-टू-द-मून वर्चुअल रन इवेंट का 1 अक्तूबर, 2020 से 31 अक्तूबर, 2020 तक आयोजन हुआ। कुल 310 किलोमीटर की दौड़ को मैंने 31 दिनों में सफलतापूर्वक पूरा किया और इसके लिए मुझे प्लेटिनम मेडल और उसके साथ प्रमाणपत्र दिया गया। फिट इंडिया फ्रीडम रन का 15 अगस्त, 2020 से 2 अक्तूबर, 2020 तक आयोजन किया गया। इसमें भाग लेकर करीब 90 दिन में 371 किलोमीटर का लक्ष्य दौडकर और पैदल चलकर सफलतापूर्वक पूरा किया, जिसके लिए मुझे सर्टिफिकेट भी दिया गया।

अक्तूबर, 2020 से नवंबर, 2020 तक मैंने शिकागो, बार्सिलोना, ऑकलैंड, न्यूयॉर्क और एम्स्टर्डम में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वर्चुअल 10 किमी की दौड़ पांच बार सफलतापूर्वक पूरी की जिसके लिए मुझे प्रमाणपत्र भी दिए गए।

रनर्स क्लान फाउंडेशन डोंबिविली द्वारा 27 फरवरी, 2022 को आयोजित गेटवे ऑफ इंडिया से डोंबिवलीतक 65 किलोमीटर अल्ट्रा रन "एक दौड़ वीर जवानों के लिए" का आयोजन किया गया और मैंने इस हिस्टॉरिकल दौड़ मे भी भाग लिया। यहां अपनी 65 किलोमीटर अल्ट्रा दौड़ मैंने 9 घंटे 18मिनिट में सफलता पूर्ण की। इसके लिए महाराष्ट्र नव निर्माण सेना के विधायक, श्री प्रमोद राजू रतन पाटील के हाथों एक सुंदर ट्रॉफी देकर मुझे सम्मानित किया गया। इसी के कारण अब अल्ट्रा रनर के

नाम से मेरी पहचान हो गई है। मेरी इस उपलब्धि की मध्य रेल में भी काफी सराहना हुई है और अब मेरा अगला लक्ष्यपुणे से न्यू मुंबई तक की 104किमी की अल्ट्रादौड़ का है।

इस प्रकार अब तक मैंने 55 बार 10 किलोमीटर की दौड़, 02 बार पोडियम फिनिशर, 40 बार 21 किलोमीटर की दौड़, 01 बार 35 किलोमीटर की दौड़, 02 बार 42 किलोमीटर की दौड़ सफलता पूर्वक पूर्ण की है। रनर्स क्लान फाउंडेशन डोंबिविली द्वारा आयोजित गेटवे ऑफ इंडिया से डोंबिवली तक 65 किलोमीटर अल्ट्रा दौड़ मैंने 02 बार सफलता पूर्वक पूर्ण की है। अब मेरी तिसरी बार की 65 किलोमीटर अल्ट्रा दौड़ में भी भाग लिया है जिसका आयोजन 4 फरवरी, 2024 को होना है। इसके अलावा मेरी तिसरी बार की 42 किलोमीटर टाटा मुंबई मैराथन दौड़ में भी भाग लिया है जिसका आयोजन 21 जनवरी, 2024 को होना है।

दौड़ने के शारीरिक लाभ

शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने का सबसे अच्छा तरीका दौड़ना है। दौड़ने का महत्व एक्सरसाइज में सबसे ज्यादा है, जिससे शरीर लचीला बन सकता है और बॉडी की अकड़न दूर हो सकती है। किसी भी प्रकार की फिजिकल एक्सरसाइज का आधार रनिंग है। यह शरीर को संपूर्ण रूप से स्वस्थ रखने का काम करती है, लेकिन क्या आप दौड़ का सही तरीका जानते हैं? इस लेख में मैं आपको दौड़ के विभिन्न शारीरिक फायदों के साथ-साथ रनिंग से जुड़े जरूरी टिप्स भी दूँगा, जिनका पालन कर आप इस फिजिकल एक्टिविटी के स्वास्थ्य लाभ ले सकते हैं।

दौड़ने से होने वाले फायदे: –

दौड़ना किसी भी बीमारी या शारीरिक समस्या का इलाज नहीं है, परंतु यह इनसे बचाव का एक तरीका है। तथापि गंभीर बिमारी से पीड़ित व्यक्ति भी अपने फैमिली डॉक्टर के परामर्श से दौड़ना जारी रख सकताहै।

1. हृदय स्वास्थ्य

यह जानकर हैरानी होगी कि नियमित रूप से दौड़ लगाने से हृदय को फायदा होता है। रनिंग, हृदय के साथ-साथ रक्त धमनियों (Cardiovascular Fitness) को भी स्वस्थ रखने का काम करता है। दौड़ने से हृदय बेहतर तरीके से काम करता है और शरीर में ऊर्जा के लिए फैटी एसिड व कार्बोहाइड्रेड का प्रयोग सही प्रकार से कर पाता है। दौड़ न लगाने वाले इंसानों की तुलना में नियमित रूप से रनिंग करनेवाले व्यक्ति का हृदय बेहतर तरीके से काम करता है। साथ ही नियमित रूप से दौड़ लगाने से हृदयरोग के चलते मृत्यु होने की आशंका में भी कमी आती है।

2. वजन घटाने के लिए

वजन घटाने के लिए भी दौड़ने के फायदे देखे गए हैं। रनिंग अतिरिक्त कैलोरी को हटाने के साथ-साथ शरीर का वजन नियंत्रित करने का काम करती है। मोटापा कम करने के लिए चलने की तुलना में दौड़ने को अधिक कारगर माना गया है, क्योंकि यह बेहतर तरीके से बीएमआई (Body Mass Index) पर काम करता है। अगर ऐसा प्रतिदिनकरते हैं, तो जरूर बेहतर परिणाम नजर आते हैं।

3. पेट की चर्बी

पेट की चर्बी घटाने में भी दौड़ने के फायदे देखे गए हैं। अगर पेट की चर्बी से परेशान हैं, तो रनिंग करना शुरू करें। फिजिकल एक्टिविटी पेट की चर्बी (Abdominal Fat) को जल्द घटाने का कारगर तरीका है। रोजाना 30-60 मिनट के लिए की गई फिजिकल एक्टिविटी बेली फैट को कम करने में मदद करती है।

4. तनाव से मुक्ति

दौड़ इंसान को सिर्फ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से स्वस्थ रखने का काम भी करती है। दौड़ शरीर में से रोटोनिन नामक हार्मोन को बढ़ाकर तनाव से मुक्ति देने का काम करती है।

5. नींद में बढ़ोतरी

रनिंग जैसी फिजिकल एक्सरसाइज अच्छी नींद को भी बढ़ावा देने का कार्य करती हैं। जैसाकि ऊपर बताया गया है कि दौड़ स्ट्रेस को दूर करती है, जिससे अच्छी नींद लेने में मदद मिल सकती है। साथ ही रनिंग मांसपेशियों को आराम देने का काम भी करती है, जिससे आरामदायक नींद लेने में मदद मिलती है।

6. रोग-प्रतिरोधक क्षमता

रनिंग का एक लाभ इम्युनिटी को बूस्ट करना भी है। रनिंग जैसी फिजिकल एक्सरसाइज से प्रतिरोधक प्रणाली बेहतर होती है। इससे रेस्पिरेटरी वायरल इंफेक्शन से उबरने में मदद मिलती है। शरीर का सही वजन (Healthy Weight) इम्यून सिस्टम को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है और एक्सरसाइज शरीर का वजन नियंत्रित करने का काम करती है।

7. मधुमेह

यह जानकर हैरानी होगी कि मधुमेह जैसी गंभीर बीमारी के खिलाफ दौड़ एक सुरक्षात्मक भूमिका अदा करती है। नियमित रूप से की गई फिजिकल एक्सरसाइज, रक्तशर्करा को नियंत्रित कर टाइप-2 डायबिटीज को रोकने का कार्य करती है। दौड़ एक कारगर एक्सरसाइज है, जिसे रेजिस्टेंस ट्रेनिंग में भी शामिल किया गया है। यह इंसुलिन की प्रतिक्रिया में सुधार करती है। इसके अलावा, फिजिकल एक्सरसाइज मधुमेह से जुड़ी जटिलताओं में सुधार करने का कार्य भीकरती है।

8. कोलेस्ट्रॉल

कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में भी दौड़ फायदे कारक हैं। एक अध्ययन के अनुसार, यह सामने आया है कि रोजाना पांच से सात मील दौड़ने से एचडीएल यानी अच्छे कोलेस्ट्रॉल में वृद्धि होती है।

9. लंबा जीवन जीने में मदद

हमारे शरीर के संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए दौड़ना बहुत जरूरी है। रनिंग सर्दी जैसी साधारण समस्या से लेकर मधुमेह व हृदयरोग जैसी घातक बीमारी की रोकथाम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दौड़ने के विविध शारीरिक लाभों के कारण लंबा जीवन जीने में निश्चित रूप से मदद मिलती है। आप भी यदि अपनी उम्र को बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको भी अपनी जीवन शैली में नियमित दौड़ को अवश्य शामिल करना चाहिए।

कार्यालय अधीक्षक
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर कार्यालय,
मुख्यालय, मध्यरेल, मुंबई छशिमट

जड़ें

स्वर्णलता छेनिया

इतना आसान नहीं मेरे
लिए खुद को उखाड़कर
कहीं और उगा लेना
क्योंकि जड़े निकल आई है मेरी
तुम्हारे प्रेम में पगने से
और कसकर लिपट गई है
तुम्हारे हृदय के चारों ओर
अब संभव नहीं है मेरे लिए
तुम्हारे हृदय को छिन्न-भिन्न करके
अपनी जड़ों को खींच लेना
छोड़ देना तुम्हें लहूलुहान
इसलिए जाऊंगी भी तो
अपनी जड़े छोड़ कर
तुम्हारे भीतर ,तुम्हारे हृदय के नजदीक
ताकि लौटूं तो फिर से
प्रस्फुटित हो सकूँ
उन्हीं जड़ों से उगा सकूँ खुद को
मेरे आने तक तुम्हें
सहेज कर रखना होगा
मेरी जड़ें, सींचना होगा
अपने प्रेम जल से
धरती में दबी हल्दी की गठानों
जैसा छुपा मेरा प्रेम.....
फिर पल्लवित होगा
और दिखाई देगा सतह पर
सुनो..... जड़े छोड़ दी मैंने.......
और अब संभव नहीं बिना
जड़ों के कहीं और उग आना.....

अध्यापिका,
12 बंगला, रेलवे स्टेशन के पास
इटारसी,नर्मदापुरम (म. प्र.)

बांद्रा स्टेशन के विरासत भवन की रोचक जानकारी

विमलेशचन्द्र

जी हाँ बिलकुल, मुंबई में रेलवे में तीसरा कोई महत्वपूर्ण विरासत भवन है तो वह है बांद्रा रेलवे स्टेशन भवन। पहला मध्य रेलवे का मुख्यालय और दूसरा पश्चिम रेलवे का मुख्यालय और तीसरा बांद्रा रेलवे स्टेशन के भवन। जो भी कारण हों लेकिन बाकी इन दोनों भवनों को विश्व विरासत का दर्जा अभी तक नहीं मिल पाया है। बांद्रा रेलवे स्टेशन के भवन को विरासत का दर्जा दिलाने, पर्यटन एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए रेल मंत्रालय तथा यूनेस्को के बीच 26 जून 2015 को बांद्रा स्टेशन पर एक ऐतिहासिक एवंमहत्वपूर्ण समझौता हुआ था। इसके अंतर्गत इस स्टेशन भवन का पुनरुद्धार करके इसके विकास एवं संरक्षण योजना तैयार करके इस स्टेशन भवन से जुड़े सड़क यातायात में सुधार, फुटपाथ, यात्री सुख सुविधाएं, सांस्कृतिक रूप से सुदृढ बनाने, स्थानीय कलाकारों द्वारा कलाकृत बनाने, इसके खूबसूरती को बढ़ाने जैसे कार्य शामिल थे।

बांद्रा रेलवे स्टेशन भवन को महाराष्ट्र सरकार के विरासती अधिनियम 1995 के अंतर्गत श्रेणी–1 के रूप में विरासत संरचना का दर्जा प्राप्त है। यह रेलवे स्टेशन मुंबई के रेलवे स्टेशनों में से एक श्रेष्ठ उपनगरीय रेलवे स्टेशन है। यह भवन लगभग 134 वर्ष पुराना है। इसका निर्माण वर्ष 1888 में हुआ था। इस स्टेशन भवन को बाहर से देखने पर विशेष प्रकार की सोपानी छत या पिरामिड की तरह संरचना दिखाई देती है जो 19वीं शताब्दी की विशिष्ट वास्तुकला के रूप में दिखाई पड़ती है।

यह स्टेशन भवन न केवल काफी पुरानी है बल्कि यह ऐतिहासिक एवं शानदार इमारत अपने वास्तुकला में गोथिक तथा वर्णाकुलर शैली में बनी हुई है। समय–समय पर इस भवन में अनेक निर्माण एवं बदलाव कार्य किए गए, जिससे कि यह भवन यात्रियों और स्टेशन के कार्य एवं आवश्यकता को पूरा कर सके। मुंबई विरासत संरक्षण समिति की स्वीकृति मिलने पर इस भवन का पुनरुद्धार कार्य शुरू किया गया था तथा पुनरुद्धार का कार्य वर्ष 2009 में पूरा कर लिया गया था।

इस स्टेशन भवन को यूनेस्को के सहयोग से विश्व स्तर पर पुन:स्थापित करने इसके विरासत एवं ऐतिहासिक महत्व को सबके जानकारी में लाने तथा इसे सांस्कृतिक एवं पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए यूनेस्को के साथ यह समझौता किया गया था। इस विरासत भवन को इसके मूल अपरिवर्तित स्थिति में वापस लाकर इस गौरवशाली भवन को विश्व विरासत के रूप में विकसित किया गया। बांद्रा रेलवे स्टेशन को “उपनगरों की रानी” नाम से भी पुकारा जाता है तथा यह बांद्रा क्षेत्र का प्रवेश द्वार के रूप में भी जाना जाता है। इस लेख में बांद्रा रेलवे स्टेशन भवन की रोचक जानकारी प्रस्तुत है।

बांद्रा स्टेशन भवन का इतिहास एवं विशेषता :- बांद्रा से रेलगाड़ियों की शुरुआत 28 नवम्बर, 1864 से शुरू हो गयी थी, जब सर्वप्रथम मुम्बई (प.रे.) में प्रथम रेलगाड़ी अब से158 वर्ष पूर्व अर्थात 28 नवम्बर, 1864 को जब प्रथम रेलगाड़ी ग्रांट रोड टर्मिनल से सूरत तक चलायी गयी थी। यह प्रथम रेलगाड़ी सुबह 7 बजे ग्रांट रोड से रवाना हुई थी। जबकि इस भवन का निर्माण कार्य बाद में शुरू हुआ और यह वर्ष 1888 में बनकर पूरा हुआ और इसे आम जनता के लिए खोल दिया गया। इस

स्टेशन भवन की पूरी डिजाइन को लंदन में बनाया गया था तथा साथ ही साथ वहाँ से जहाज से सामान लाकर इसे वर्ष 1869 से बनाना शुरू किया गया। इस पूरे स्टेशन भवन को एक तरह से लंदन से लाए हुए सामानों से जो कि लंदन से बनकर आए थे उन्हे यहाँ फिक्स कर दिया गया और स्टेशन भवन बना दिया गया। यह अपने आप में एक अनोखी घटना थी। इस भवन की छतें पिरामिड के आकार की तरह लगतीं है।

इसकी टाइलदार रुफ टावर, गहरे वरामदे इत्यादि इसके कालोनियल वर्नाकुलर संरचना का अद्‌भुत उदाहरण है। अन्य रेलवे स्टेशनों की तरह इस रेलवे स्टेशन भवन का निर्माण तत्कालीन बाम्बे बड़ौदा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे द्वारा किया गया था। प्रारंभ में इस भवन के कमरे और फर्श, इटेलियन टाइल्स के बने थे। जब इस स्टेशन की शुरुआत हुई थी तब यहाँ केवल दो प्लेटफॉर्म थे, जो अभी वर्तमान में भी प्लेटफार्म सं. 1 एवं 2 के नाम से जाने जाते हैं। उस समय रेलगाड़ियों में कम कोच होते थे। इसलिए उस समय यह प्लेटफॉर्म भी छोटा था किन्तु उसकी मूल संरचना अभी भी वैसे ही है। इसके प्लेटफार्म के छत अर्धवृत्ताकार लोहे के टुकड़ों से बने हैं तथा इसके छत में लगे स्टील के टुकड़े भी आकर्षक डिजाइन में बने हैं।

यह स्टेशन भवन, भारतीय रेल के भवन निर्माण कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। पहले यहाँ एक छोटा स्टेशन भवन था, जिसको दुबारा बना करके यह वर्तमान भवन वर्ष 1888 में बनाया गया। इस भवन पर बना टावर संभवत: उस समय वाच टावर के रूप में उपयोग किया जाता था। स्टील संरचनाओं से इस भवन का निर्माण, भवन इजीनियरिंग का अदभुत उदाहरण है। इस स्टेशन भवन के बड़-बड़े दरवाजें, खिड़कियाँ, बरामदें, छज्जों तथा लाल टाइल्सों से बनी छत तथा उसके दो प्लेटफार्म पुनर्निर्माण होकर वर्ष 1888 में बन पाए। इसके बनने में देरी होने का कारण इंगलेंड से मंगाया गया छत और अन्य सामान यहाँ देरी से आए जिसके कारण इसे पूरा होने में देरी हुआ। इसका छत तो देरी से बनने के कारण यह स्टेशन भवन पूरी तरह से वर्ष 1889 में जाकर खुल पाया। इस स्टेशन भवन निर्माण का कुछ कार्य तत्कालीन मैसर्स बाझोनजी एंड दोसा भाई बागजी ने किया। उस समय उसकी लागत इसके अनुमानित लागत से बहुत कम आयी तथा लागत 1 लाख 44 हजार रुपए के लगभग आयी थी। रीट आयरन पर पच्चीकारी के बारीक काम बर्मा टीक के बीम, टीक वुड का उपयोग, लकड़ी में मढ़ी मंगलूर टाइल की कवरिंग,आयरन साइन होल्डर, विक्टोरियन समय के फर्नीचर इत्यादि इसके विशेषता को और अधिक बढाते हैं। वर्तमान में अभी भी यहाँ वर्ष 1888 में बने लोहे के कुछ पुराने खंभे यहाँ प्लेटफार्म पर लगे हुए मिल जाएंगे। इस प्रकार यह स्टेशन भवन, अपने विशेष प्रकार के निर्माण के कारण न केवल ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और विरासत रूप से उपयोगी है बल्कि अपने निर्माण के इतने वर्षो के बाद भी यह स्टेशन भवन पश्चिम रेलवे के उपनगरीय रेलगाड़ियों के यात्री यातायात को वहन करने और सुरक्षित ढंग से और मजबूती के साथ खड़े होकर एक नया इतिहास रचने की ओर अग्रसर है।

बांद्रा स्टेशन का रेलवे इतिहास :- यह रेलवे स्टेशन पश्चिम रेलवे के मुम्बई मंडल में उपनगरीय रेलवे में आता है। इस समय यहाँ कुल 7 प्लेटफार्म हैं। विरार और बोरीवली से आनेवाली पश्चिम रेलवे की रेल लाइन इस स्टेशन से होते हुए चर्चगेट तक उपनगरीय रेल लाइन के रूप में तथा मुम्बई सेंट्रल तक मेन लाइन के रूप जाती हैं। इस स्टेशन पर हार्बर लाइन भी है जो कि मध्य रेलवे के

स्टेशन छत्रपति शिवाजी टर्मिनस तक जाती है। अर्थात इस स्टेशन पर पश्चिम रेलवे तथा मध्य रेलवे की रेलगाड़ियाँ आती जाती हैं।

इस स्टेशन का पहले नाम " बंदोरा " था जो कि यहाँ स्थित बन्दरगाह के नाम पर पड़ा था। बन्दरगाह को सामान्यतः बंदर कहा जाता था। वर्तमान में इसका हिन्दी में नाम "बांद्रा" या "बान्द्रा" है जबकि मराठी में "बांद्रे" कहा जाता है। इस स्टेशन की कई ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त हैं जैसे कि पूरे भारतीय रेल में यहाँ सर्वप्रथम प्रथम श्रेणी का महिला प्रतीक्षालय उपलब्ध कराने का गौरव प्राप्त है तथा यहीं से सबसे पहले शिकायत पुस्तिका की शुरुआत हुई थी। इस स्टेशन की शुरुआत 28 नवम्बर, 1864 को "बंदोरा" नाम से हुई थी। इसी वर्ष वेटिंगरूम और नेटिव रेस्ट हाऊस की व्यवस्था की गयी।

01 नवम्बर, 1865 को ग्रांटरोड से वसीन रोड (वसई) के बीच प्रथम उपनगरीय रेलगाड़ी यहाँ से होते हुए चलाई गयी थी। 20 फरवरी, 1867 को यहाँ से मीट ट्रेन अर्थात मांस ढोने वाली ट्रेनों की शुरुआत की गयी थी जो 12 वर्षो तकचलती रही। 12 अप्रैल 1867 को बैकबे से विरार के लिए एक नयी उपनगरीय रेलगाड़ी यहाँ से होते हुए चलायी गयी। 10 जून, 1869 को माहिम से बांद्रा तक रेल सेवाओं का विस्तार किया गया। वर्ष 1891 में सिगनलों का इंटरलाकिंग किया गया। वर्ष 1892 में यहाँ से चर्चगेट के लिए फास्ट ट्रेनों की शुरुआत की गयी। वर्ष 1917 में माल यातायात के लिए तथा अक्टूबर 1920 में यात्री यातायात के लिए बांद्रा-माहिम रेल लाइन का चौहरीकरण किया गया।

इसी प्रकार वर्ष 1920 में यहाँ ट्रेन नियंत्रण प्रणाली शुरू की गयी। वर्ष 1922 में परेल-बांद्रा खंड का चौहरीकरण किया गया। 23 मई, 1925 को नए आइलैंड प्लेटफार्म के साथ स्टेशन का रिमाडलिंग किया गया। 03 फरवरी, 1927 को जी.आई.पी. ने यहाँ से अपनी विद्युत ट्रेन चलायी। 10 जनवरी, 1928 को मुंबई-सेन्ट्रल-बांद्रा थ्रू लाइन का उद्घाटन हुआ। मई, 1935 में बांद्रा केबिन, बिजली के सिगनलों का उपयोग करने वाला पहला केबिन बना।

वर्ष 1945 में बांद्रा स्टेशन देश का सबसे पहला संपूर्ण इंटरलाकिंग वाला स्टेशन बना। 15 अप्रैल, 1953 को बांद्रा-अंधेरी थ्रू लाइन का विधुतीकरण हुआ। वर्ष 1974 में रुट रिले इंटरलाकिंग सिस्टम शुरू हुआ। 01 अक्टूम्बर, 1983 को बांद्रा-खार फ्लाई ओवर के साथ सी.एस.टी.-अंधेरी के बीच हार्बर लाइन की केंद्रीकृत उपनगरीय सेवा शुरू हुई। इसी समय यहाँ के स्टीम शेड को डीजल शेड में बदला गया। वर्ष 1993 में बांद्रा टर्मिनस स्टेशन नाम से एक नए और आधुनिक स्टेशन का उद्घाटन हुआ।

इस प्रकार से लगभग 134 वर्ष पुराना यह बांद्रा स्टेशन अनेक कीर्तिमानों से भरा पड़ा है बल्कि अब यह विश्व विरासत के रूप मे भी आगे बढ़ने वाला है।

सेवानिवृत्त रेल अधिकारी
अहमदाबाद मंडल, पश्चिम रेलवे

मैं चंद्रयान हूं

रजनीश दुबे "धरतीपुत्र"

हां मैं चंद्रयान हूं, भारत के यश का गान हूं।
उड़ा अनंत आकाश में ,मैं ढूंढने मुकाम हूं।।

विशिष्ट ये प्रविष्ट है, श्वेत उस निशान पर।
हैं तिरंगा लग चुका , भारत के चंद्रयान पर।।

जीतने को चल पड़ा हूं, वायु मेघ चीरकर।
मानों बाण राम के चले , तूणीर छोड़ कर।।

लक्ष्य को सहेज कर, है लक्ष्य भेदना मुझे।
बीते उन क्षणों की अब, नहीं हैं वेदना मुझे।।

कर्म के प्रभाव का मैं, उत्कर्ष इक प्रमाण हूं।
मां भारती की ओर से, मैं चंद्र को प्रणाम हूं।।

भविष्य की समस्या का ,मैं ही तो निदान हूं।
विज्ञान का वरदान हूं , हां मैं ही वर्तमान हूं।।

कितनी ही अनिद्रा का, मैं जागता परिणाम हूं।
जितनी उम्र खप गई मैं, उस समय का दान हूं।।

ब्रह्मांड चक्र–व्यूह से, निकलने में सुजान हूं।
हां गर्व से कहो मैं, तुम सभी का चंद्रयान हूं।।

जो लिख दी है विधाता ने विधि का मैं विधान हूं।
जय जवान जय किसान कहने वाला चंद्रयान हूं।।

स्वप्न को जो कर रहा है, सत्य स्वाभिमान हूं।
इस राष्ट्र का मैं राष्ट्रगान, हां मैं ही चंद्रयान हूं।।

हां मैं चंद्रयान हूं ,भारत के यश का गान हूं।
उड़ा अनंत आकाश में, मैं ढूंढने मुकाम हूं।।

वर्धमान टैक्सटाइल कंपनी
एकाउंट शाखा, नर्मदापुरम, मध्यप्रदेश

इंसान इंसानियत भूल रहा है

संकल्प वर्मा

इंसान इंसानियत भूल रहा है
या दंभ मे चूर रहा है
देख रहा है खुली आंखों से
मुख पर ताला झूल रहा है
इंसान इंसानियत भूल रहा है

कर रहा फरियाद तुमसे आज
हाथ सहारे ढूंढ रहा है
थे बढ़ाने हाथ, मगर वह
दर्शक बनकर मूक खड़ा है
इंसान इंसानियत भूल रहा है

देख रहा है स्वार्थ अपना
सबका सुख वो भूल रहा हैं
दे रहे थे पहले साथ अपना
उनका दामन छूट रहा है
इंसान क्यों इंसानियत भूल रहा है?

आशुलिपिक (अंग्रेजी प्रधान मुख्य सिगनल
एवं दूरसंचार इंजीनियर कार्यालय
मुख्यालय, मध्य रेल, मुंबई छशिमट

"सच्चे लोग" - "अच्छे लोग"

किशोर एस. कुदरे

कहते हैं कि दुनिया में दो तरह के लोग पाए जाते हैं। एक होते हैं , सच्चे लोग और दूसरे झूठे लोग।

कई वर्षों पहले शायद ऐसा था। पहले या तो लोग सच बोलते थे या झूठ। लोगों की ये दो ही श्रेणियां थी। जो सच बोलते थे वो शराफत से शरीफों में शामिल होते थे और जो झूठ बोलते थे वे सभी लोफ़रों में हिक़ारत से शामिल होते थे। शायद इसीलिए ही यह मुहावरा भी बना होगा कि,"सच्चे का बोलबाला और झूठे का मुंह काला"। सच के आगे झूठ कांपने लगता था। सच अभिमान से और झूठ अपमान से ओत-प्रोत रहते थे। सच की जय जयकार होती और झूठ को दुत्कार मिलती।

इतने सालों से सच का ये प्रभाव झूठों से देखा नहीं जा रहा था और इस पर अत्याधिक दुःख इस बात का था कि सच की तुलना में झूठ की आबादी बड़ी होने के बावजूद उन्हें सच के आगे देर से ही सही किन्तु घुटने टेकने पड़ते थे। समय बदलता गया और झूठ में सच के प्रति बदले की भावना जागृत हुई। सारे झूठ एकत्रित हुए और सच के कारण वर्षों से ज़िल्लत झेल रहे झूठों ने अपना संगठन बनाया। चूंकि संगठन झूठ का था , इसलिए झूठों की विभिन्न प्रजातियां जैसे, लालची, आलसी, मुफ्तखोर, चापलूस, कामचोर, गद्दार, बेईमान आदि तत्काल इसमें शामिल हुईं। ये सब सच से बेहद पीड़ित थे और सभी चाहते थे कि सच को किसी तरह परास्त कर खुद को सम्मानजनक स्थिति में लाया जाए।

सच को परास्त करने के संबंध में उक्त प्रजातियों ने अपने-अपने कई कुविचार रखें किन्तु सच को परास्त करने का कोई हल नहीं निकल सका। फिर आम सहमति से झूठों ने मान लिया जो सही भी था कि सच को कभी परास्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इन्होंने दूसरा तरीका अपनाया। थोड़ा और गहन विचार करने पर उनकी समझ में आया कि सारी समस्या की जड़ इस "झूठ" नाम में है। झूठों का शातिर दिमाग सोचने लगा कि क्यों न हम इस नाम को ही बदल दें। किसी ने कहा है कि "नाम में क्या है।" किन्तु इनकी सारी समस्या इसी नाम के कारण ही थी। इन्होंने सोचा कि इस "झूठ" नाम को बदलकर ऐसा नाम रखा जाए जो सच से मेल खाता हो ताकि इस नाम की आड़ में बिना सच की नफरत झेले अपनी बिरादारी के सारे गंदे काम आसानी से किए जा सके। बस फिर क्या था सर्व सहमति से सच से मेल खाता हुआ नामकरण किया गया। नाम रखा "अच्छे लोग"।

यह बात "सच्चे लोगों" तक पहुंची कि हम "सच्चे लोगों" की ही तरह ये "अच्छे लोग" है। उनको भी सुनने में अच्छा लगा कि उनके जैसे ही ये लोग होंगे। किन्तु सच्चे लोग यह नहीं जान पाए कि इन झूठों का केवल नाम बदला है, काम नहीं। और इस तरह आज के समाज में "सच्चे लोग" और "झूठे लोग" के स्थान पर "सच्चे लोग" और "अच्छे लोग" रहने लगे।

ये तथाकथित "अच्छे लोग", "सच्चे लोगों" के कंधे से कंधा मिलाकर चलते, उठते, बैठते हैं। किन्तु सच्चे को इसकी भनक तक नहीं लगी कि "अच्छाई" के नकाब में ये वही झूठे लोग हैं।

ये "अच्छे लोग" अपने दुश्मन से भी दोस्ती की अच्छी-अच्छी बातें करके अपना सम्मान करवा लेते हैं। इन "अच्छे लोगों" को जिससे भी अपना काम निकलवाना हो, अपनी स्वार्थपूर्ति करनी हो,उसके सामने,उसके हित का सब अच्छा-अच्छा बोलते रहते हैं। वो इतना "अच्छा" बोलते हैं कि, सब कुछ जैसे सच्चा लगने लगता है। और हर कोई इन अच्छी बातों में फंस जाता है। ऐसे अच्छे लोगों के अनगिनत बनावटी किस्से हर एक की जिंदगी से गुज़रते हैं। आज जिसको देखो वो ही "अच्छा" बनकर अपना उल्लू सीधा कर रहा है।

यह झूठे उर्फ "अच्छे लोगों" की बिरादरी के लोग अपने लालच को पूरा करने के लिए निस्वार्थपन का, आलसी लोग अपने सक्रियता का, मुफ्तखोर अपनी खुद्दारी का, चापलूस अपने कर्तव्य परायणता का, कामचोर अपने परिश्रम का, गद्दार अपनी वफादारी का, बेईमान अपनी ईमानदारी का ऐसा ढोंग रचाते हैं कि सच्चाई भी इसमें दब के दम तोड़ जाए।

हालात तो यह है कि इसलिए ही अब चाहकर भी कोई सच्चा बोलना नहीं चाहता। सच कड़वा होता है, और सच्चा बोलने से काम बिगड़ते हैं,परेशानी बढ़ती है। लोग जुड़ने की बजाए टूटने लगते है। आदमी अकेला पड़ जाता है। किन्तु मन में चाहे जो रखो, पर मुंह से अच्छा बोलो तो लोग इस अच्छेपन की बातों में सच्चाई को नजरअंदाज़ कर देते है। लोगों का उल्लू सीधा और स्वार्थ सिद्ध होता जाता है। जब तक पता चलता है कि अच्छेपन की आड़ में सच्चाई का गला घोटा गया, तब तक देर हो चुकी होती है और "अच्छाई" के नाम से पीड़ित आदमी कुछ नहीं कर पाता। उसके सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं। एक तो यह कि वो भी इसी अच्छाई के झूठे नकाब में जी कर औरों को पीड़ित करें या फिर किसी भी सूरत में सच्चाई का दामन न छोड़े।

कुछ लोग ऐसी अच्छाई के साथ हो लेते है और चंद सच्चाई से ही जुड़े रहते है। और इन चंद सच्चाई से जुड़े लोगो के कारण ही सच्चाई आज भी ज़िदा है और इसके आगे "झूठ" के शहद में लिपटी अच्छाई शर्मिंदा है।

वरिष्ठ अनुवादक
महाप्रबंधक कार्यालय, ,मध्य रेल,
मुंबई छ.शि.म.ट.

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

- मदन मोहन मालवीय

राजभाषा कार्यान्वयन - प्रमुख चुनौतियां एवं उपाय

धर्मेंद्र प्रसाद तिवारी

भारत एक बहु सांस्कृतिक एवं बहुभाषिक देश है। भारतीय संविधान में राजभाषा हिंदी सहित कुल 18 भाषाओं का स्थान प्राप्त हुआ है। देश के अनेक भागों में धर्म, व्यापार, पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी का समुचित प्रयोग किया जाता है। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी सरकारी अर्धसरकारी, सरकारी उद्यामों में हिंदी भाषा का प्रयोग अनिवार्य किया गया है।

कंप्यूटर एवं इंटरनेट में 21वीं सदी में , भाषा और भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी तरह हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद किया जा सकता है। सूचना क्रांति और सोशल मीडिया के प्रभाव से अब हिंदी की संरचना पूरी तरह से बदल गई है। संचार माध्यमों के आधार पर हिंदी के नए-नए रूप बन रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हिंदी का केवल भारत में ही नहीं तो विश्व प्रचार- प्रसार हो रहा है। क्रांति और सोशल मीडिया के प्रभाव से अब हिंदी की संरचना पूरी तरह से बदल गई है। इंटरनेट के साथ ही अब हम हिंदी में एसएमएस भेज सकते हैं। मोबाइल में हिंदी में टाइपिंग कर सकते हैं। कंप्यूटर के कारण आज सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण, भंडारण और संप्रेषण आसान हो गया हैं। हिंदी भाषा का उपयोग व्यापक रूप में कंप्यूटर पर हो रहा हैं। टंकण , मुद्रण और कंप्यूटर का नियंत्रण हिंदी में सहज संभव हो रहा हैं। इंटरनेट से ई-मेल भेजने और प्राप्त करने की सुविधा हिंदी में उपलब्ध हो गई हैं। हिंदी भाषा में आज अनगिनत वेबसाइट उपलब्ध है। इन वेबसाइटों पर हिंदी की समस्त पुस्तकें, पत्रिकाएं और ब्लॉक प्रस्तुत हैं। फेसबुक में भी अब हिंदी का प्रयोग हो रहा हैं। अनेक हिंदी शब्दकोश और विश्वकोश इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के तहत मशीनी अनुवाद एवं लिप्यंतरण सहज एवं सरल हो गए हैं। सी-डेक पुणे में, सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी हिंदी में पारस्परिक कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद (निविदा सूचना, स्थानांतरण आदेश, बजट परिपत्र आदि) करने हेतु मशीन असिस्टेंट ट्रांसलेशन "मंत्रा" विकसित हुआ है। हिंदी भाषा में वैबपेज विकसित करने हेतु 'प्लगइन' पैकेज तैयार किया गया है जिससे कोई भी व्यक्ति /संस्था अपना वैबपेज हिंदी में प्रकाशित कर सकता है।

कंप्यूटर में हिंदी की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नोलॉजी विकास नामक परियोजनाओं के अंतर्गत की प्रोजेक्ट शुरु किया है। इस प्रयास में आई.आई.टी. कानपुर और सी–डैक की भूमिका प्रमुख थी। यूनिकोड इस दिशा में एक बड़ी क्रांति है। हिंदी का यूनिकोड, फॉँट मंगल एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के फॉँट इनबिल्ट हैं। हम सबको यूनिकोड में काम करना चाहिए, जिससे हिंदी कामकाज में एकरूपता लाई जा सके और एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में दुनिया के किसी भी कोने में हमारी हिंदी की फाइल खुल जाए।

हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद सॉफ्टवेयर का विकास आई.आई.टी. कानपुर तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय में किया जा रहा है। सी-डैक पुणे में प्रशासनिक सामग्री के लिए विशेष सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। सी-डैक पुणे द्वारा निर्मित लीप ऑफिस सॉफ्टवेयर में अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश, अनुवाद, समानार्थी शब्दकोश, हिंदी में ई-मेल आदि अंग्रेजी भाषा के समकक्ष सभी सुविधाओं को प्रस्तुत किया गया है।

मोबाइल और इंटरनेट क्रांति ने जीवन का नक्शा बदल दिया है। इसका प्रभाव हिंदी राजभाषा में भी दिख रहा है। आज लाखों एप्प गूगल प्लेस्टोर में भी उपलब्ध है। सर्वाधिक लोकप्रिय एप्प श्रेणी में हिंदी व्याकरण, हिंदी की-बोर्ड, शब्दकोश, हिंदी कैलेंडर, लर्न हिंदी, हिंदी मुहावरे, शायरी, कविता, हिंदी चुटकुले, आयुर्वेद, सामान्य ज्ञान, धार्मिक सहित्य, बी.बी.सी. हिंदी, भविष्य, आदि अनेक उपयोगी एप्प का संग्रह है।

गूगल सर्च, गूगल ट्रांसलेटर, जी की-बोर्ड, गूगल असिस्टेंट ऐसी और गूगल की सेवा हिंदी में उपलब्ध है। आप गूगल असिस्टेंटनर का इस्तेमाल का हिंदी में कर सकते हैं। 'ओके गूगल' बोलकर आप हिंदी में अपना प्रश्न पूछकर आपको हिंदी में आपका जवाब गूगल असिस्टेंटनर देता है। भारत सरकार की डिजिटल क्रांति जैसे कि माय गव., एम गवर्नेंस और उमंग जैसे एप्प का प्रयोग आप अपनी राजभाषा हिंदी में कर सकते हैं। आज कंप्यूटर की सहायता से विश्वविद्यालय हिंदी के पाठ्यक्रम ऑनलाइन विदेशी छात्रों को पढ़ा रहे है। इससे हिंदी का प्रचार और प्रसार विकास पूरे विश्व में हो रहा है। भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के नीतिनिर्धारण में हिंदी भाषा को समुचित स्थान दिया है। जिससे कि हिंदी का विकास प्रौद्योगिकी द्वारा तेज गति से किया जाए। कई मंत्रालयों एवं विभागों की साइट पर डायनामिक हिंदी प्लांट यानि यूनिकोड का इस्तेमाल किया जा रहा है।

हिंदी राजभाषा के विकास में प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जिससे 'स्पीच रिकग्रीशन एक है। यह एक ध्वनि आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर है। स्पीच रिकग्रीशन के सहारे अनपढ़ व्यक्ति भी कंप्यूटर के सामने बैठकर अपने विचार, शिकायत, सुझाव आदि बोलकर अपनी भाषा में संबंधित कंप्यूटर का लिपिबद्ध कर सकता है। कंप्यूटर पर हिंदी भाषा ध्वनि, चित्र एनीमिशन के सहारे विकसित की जा रही हैं। सूचना और प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश में हिंदी भाषा में अपना स्थान धीरे-धीरे प्राप्त कर लिया है। 20वीं शताब्दी में जैसे-जैसे भारत ने विज्ञान और तकनीकी, अंतरिक्ष विज्ञान, अणु विज्ञान एवं उद्योग आदि के क्षेत्र में नई मंज़िले तय की, वैसे-वैसे देश में इन विषयों के शब्दावली को विकसित करने की कोशिश की गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के तहत मशीनी अनुवाद एवं लिप्यंतरण सहज एवं सरल हो गया है। राजभाषा विभाग के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधरित अनुवाद प्रणाली कंठस्थ का निर्माण उसका विकास किया है। साथ ही न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन के साथ इस नए वर्जन कंठस्थ 2.0 के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण कर कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत आसान हो गया है। खासकर गूगल हिंदी इनपुट और माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज़ टूल की सहायता से अंग्रेजी की-लेआउट के जरिए अंग्रेजी की ही गति से हिंदी में भी कंप्यूटर का आसानी से काम किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हिंदी का केवल भारत में ही नहीं तो विश्व में प्रचार-प्रसार हो रहा है। हिंदी अब कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल और जनसंचार माध्यमों की भाषा बन गई है। दूरदर्शन और टी.वी. के अनेक चैनल हिंदी को लोगों तक पहुंचा रहे हैं। हिंदी फिल्में भी यह भूमिका निभा रही हैं। प्रिंटमीडिया के कारण हिंदी का लिखित रूप अमर बन गया है। हिंदी भाषा अंतर्रराष्ट्रीयता की ओर चल पड़ी है। वह अब रोजगार और संचार की भाषा बन गई है। प्रौद्योगिकी से एक ओर हिंदी का विस्तार हुआ हैं तो दूसरी और उसका रूप परिवर्तित हो रहा है. किंतु हिंदी को राष्ट्रभाषा, विश्वभाषा और राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने की दृष्टि से सूचना प्रौद्योगिकी का यह कार्य अनूठा है, इसमें कोई शक नहीं।

वरिष्ठ अनुवादक

मुख्यालय, मध्य रेल

फक्त महिलांसाठी

देविना चौकसे

अर्थात केवल महिलाओं के लिए, अरे नहीं! निश्चिंत रहें, अगर आप पुरूष हैं तो भी इसे पढ़ सकते हैं। यहां बात हो रही है मायानगरी के उस हिस्से की जो यहां की महिलाओं के लिए बड़ा खास है। मुंबई आकर बसने से पहले लोगों के मन में कई तरह के विचार, भाव, चिंता, और भय उत्पन्न होता है और सबसे बड़ा भय है "लोकल ट्रेन" में चढ़ना उतरना, क्योंकि इसके बिना मुंबई में कहीं भी पहुँचना लगभग नामुमकिन है। सोशल मीडियावाले इस युग में "लोकल" के भयावह वीडियो किसी से छुपे नहीं हैं। लोगों का लटक कर जाना, धक्का-मुक्की और अथाह जनसैलाब और मेरे मुंबई आने के पहले एक मित्र ने ज्ञान दिया कि जब वह पहली बार नौकरी के लिए मुंबई आया था तब सात लोकल छोड़ी थी तब आठवीं पकड़ पाया साथ ही मुझे 'फक्तमहिलांसाठी' डिब्बे में यात्रा करने की नसीहत भी दे डाली। 'सात लोकल' मेरे भय को गुणित करने के लिए पर्याप्त था। खैर, सरकारी नौकरी थी तो मुंबई तो आना ही था। हरिकृपा से कुछ ऐसा संयोग बना कि शुरू के कुछ समय तो लोकल के दर्शन नहीं हुए पर कहते हैं ना जैसे, पानी में रहकर मगर से बैर नहीं कर सकते, मुंबई में रहकर लोकल से द्वेष निषेध है। आपको इससे यारी करना ही पड़ेगा।

तो पहले दिन जब लोकल ने मेरी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया मेरे हाथ बढ़ाने के पहले ही वह चली गई। यह मायानगरी की पहली सीख थी मुझे, जो सुनते तो हमेशा से आए हैं किंतु समझ आज आया। अंग्रेजी में रहते हैं "ग्रैब द अपॉर्च्युनिटी"और हिंदी में रहते हैं, अवसर का लाभ उठाएं। अब अगली लोकल से हाथ मिलाने को बहुत से लोग अपने बस्ते को सीने से लगाए उत्सुकता से खड़े थे। मैंने ठान लिया था कि इस लोकल से मित्रता हो ही जाएगी पर वह किसी मशहूर अभिनेत्री की तरह आई और अविलंब निकल गई कुछ भाग्यशाली प्रशंसकों को उसके साथ सेल्फी लेने का मौका मिल गया और मैं पहले की भांति प्लेटफार्म पर खड़ी गेट पर लटके लोगों को देखते रह गई। अब पिछली दो आपबीती से सीख लेकर मैंने तय किया कि इस बार तो विजय परचम लहराना ही है, हां! जंग जैसा ही प्रतीत हो रहा था। अगली लोकल आई और मैं भीड़ के बीच में खड़ी न जाने कैसे उसमें चढ़ गई। अरे! चलो आगे, अंदर कितनी जगह खाली है, किसी ने पीछे से चिल्लाया। मैं इस तरह फंसी थी कि घूम कर देखना भी मुमकिन न था। इंच-इंच सरक कर कुछ जगह बनी और मैं अपने दोनों पैरों पर खड़ी हो पाई। यकीन मानिए यह वाला 'अपने पैरों पर खड़े होना' भी अत्यंत सुखदायक था। अचानक किसी सभ्य महिला ने मुझसे चिढ़ कर कहा "हैव यू बोर्डेड द लोकल फॉर द फर्स्टटाइम?" मैंने कहा 'यस'।

उसके चेहरे के हाव-भाव बदल गए। शायद उसे इस उत्तर की अपेक्षा न थी, फिर मुझे समझाते हुए बोली अगर कुर्ला नहीं उतरना है तो थोड़ा अंदर आ जाओ वरना भीड़ उतार देगी। अब अंदर जाना भी एक अलग मैदान फतेह करना था, जहां न मैदान था न खाली जगह। जैसे तैसे पहले दिन गंतव्य पर पहुंची। तीसरी ही लोकल पकड़ लेने के लिए खुद की सराहना की और अगले दिन के डर को छुपाने का भरपूर प्रयत्न। अब पहले दिन की भांति रोजाना नए-नए ज्ञान प्राप्त होने लगे जैसे प्रथम श्रेणी में यात्रा करते समय अगर आपकी किसी से बहस हो गई है तो कृपया अंग्रेजी में लड़ें वरना आप 'इलिटरेट' माने जाएंगे, सीट पर बैठे यात्री के गंतव्य स्टेशन से अपनी सीट बुक कर कन्फर्म करा लें और सबसे आवश्यक यदि आप दरवाजे पर हैं तो ट्रेन के रुकने से पहले ही उतर जाएं वरना आप पर दूसरे यात्रियों को न उतरने देने के गंभीर आरोप लगा सकते हैं। अच्छा आपके साथ कभी-कभी कुत्ते और बिल्लियां भी यात्रा कर सकती हैं तो कृपया इनके साथ सहयोग करें। एक और अजीब सुपरपावर दिखा मुझे इन 'प्रथम श्रेणी' वाली महिलाओं का, यह टीसी की तरह देख कर बता सकती हैं कि इस महिला के पास प्रथम श्रेणी का टिकट है या नहीं।

अब एक दिन द्वितीय श्रेणी के'फक्त महिलांसाठी' में चढ़ गई। भीड़ थोड़ी कम थी तो अपने पैरों पर खड़ी हो पाई, मोबाइल निकाला और इंस्टाग्राम खोला ही था कि गर्म समोसे की खुशबू से मेरा ध्यान भंग हुआ। अब आप सोच रहे होंगे कि यह क्या बात हुई गर्म और ठंडे समोसे की खुशबू में कोई भेद है क्या? भाईसाहब किसी कट्टर भोजन प्रेमी से पूछिए। अच्छा रहने दीजिए मत पूछिए, क्योंकि यह अलौकिक अनुभूति शब्दों में समेटना संभव नहीं और अगर आप मेरी बात से सहमत है तो खुद को गर्व से वृकोदर कह सकते हैं। तो यहां हो रहा था किसी महिला का बर्थडे सेलिब्रेशन। कुछ सात-आठ महिलाएं अपने में मग्न ऐसी पार्टी कर रही थी जैसे कोई और वहां हो ही न। अभी परसों ही बाहर का खाना बंद करने का प्रण लिए मैं अब उन आठ महिलाओं को दोषी मान रही थी जिनकी वजह से मुझे शाम को स्टेशन उतरकर गर्म-गर्म समोसे खरीदने पड़ेंगे और इसके साथ ही मेरे प्रण के प्राण निकल जाएंगे। अब वहां से हटकर थोड़ा दूर खड़े होने में मैंने अपनी भलाई समझी और अगले ही स्टेशन पर एक सीट खाली हो गई। वहां बैठकर अब मैंने कानों में इयरफोन लगाया और इंस्टाग्राम खोलकर 'रील्स' देखना चालू कर दिया। इतने में एक महिला ने अपनी बड़ी सी पोटली में से बहुत से हार, बालियाँ, कुंडल और अंगूठियों का अंबार मेरे सामने टांग दिया। स्वतः ही हाथ ने मोबाइल छोड़ दिया और तरह-तरह कि सुंदर बालियों की ओर बढ़ गया। अचानक एक जानी पहचानी सी बाली ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। "ये कितने की है?" मैंने पूछा, "50 रुपे ताई"। 'सत्यानाश' पिछले शनिवार यही बालियाँ 'मॉल' से ढाई सौ रुपए में लेकर आई हूँ, ये कम से कम सौ तो कह देती तब

शायद मुझे इतना बड़ा आघात न लगता। महिलाएं समझ सकती हैं कि उस क्षण मेरे हृदय पर क्या बीती होगी। खैर, 'अब पछताए होत क्या' सोच कर स्वयं को समझाया और 'सोशल मीडिया' को मेरा दुख कम करने का जिम्मा सौंप दिया। इतने में मेरे मोबाइल की स्क्रीन पर धनिया की पत्ती उड़कर चिपक गई। बाजू में अधेड़ उम्र की काकू धनिया गोद में फैलाए पत्ती तोड़कर पन्नी में रख रही थी। मुझे देखकर प्रेम से मुस्कुरा दी। मैंने भी मुस्कुरा कर वापस मोबाइल में अपना ध्यान केंद्रित कर दिया, क्या पता अपनापन जताकर वह मुझे भी धनिया तोड़ने में लगा देती। अब जब 'रील्स' से समय मिला तो गाने लगाकर वास्तविक दुनिया में प्रवेश किया और क्या देखती हूँ कि लगभग सभी महिलाएं एक दिशा में देख रही है उत्सुकतावश नज़रें घुमाई तो बाजू वाले जनरल डिब्बे में एक प्रेमी युगल की तू तू-मैं मैं चल रही थी और मेरे कानों में बज रहा था "तू है तो मुझे फिर और क्या चाहिए"। तुरंत इस विरोधाभासी परिस्थिति को सुधारा और इयरफोन हटाए, 'बहुत हो गया तुम्हारा, अब बस मुझे सुकून चाहिए! ठीक है इट्स ओवर'। लड़का गेट पर आकर खड़ा हो गया और लड़की सीट पर बैठी रही। इतनी कम लड़ाई देख पाने का मलाल तो था पर ठीक है आज के लिए इतना काफी था। यहां तो नित्य ही नई-नई कहानियां बनती हैं। इतने समय में मैंने यह तो जान लिया है कि यहाँ लोकल मुंबईकरों के लिए मात्र 'अप-डाउन' का साधन नहीं है अपितु इनके जीवन का एक अभिन्न अंग है। कहना गलत नहीं होगा कि लोकल ट्रेनों के बिना मुंबई अधूरी है। जब मैंने रक्षा बंधन के समय महिलाओं-पुरुषों को लोकल ट्रेन को राखी बांधते देखा तो समझ आया कि लोगों के मन में यहाँ लोकल के लिए किस हद तक प्रेम की भावना है जिनके साथ अवश्य ही शब्द न्याय नहीं कर सकते। रोज सुबह लोग अपने निर्धारित समय की लोकल में निर्धारित डब्बे में ढोलक-मंजीरे के साथ कीर्तन करते हुये अपने कार्यस्थल को जाते हैं। गणेशोत्सव के समय कुछ ट्रेनों में गणपति स्थापना तक की जाती है। मैंने लोगों को लोकल में चढ़ने के पूर्व इसे स्पर्श करके हृदय से नमन करते देखा है। अब धीरे-धीरे मेरी भी लोकल से मित्रता बढ़ने लगी है, रोज इसके साथ लगभग दो घंटे जो बिताने पड़ते हैं, सभी महिलाओं के सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण डब्बे में, जिसका नाम है "फक्त महिलांसाठी"।

कनिष्ठ अनुवादक
मध्य रेल मुख्यालय
छशिमट मुंबई

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी

जीवन एक रेल सफर

भानुप्रताप हाडा

हम सबने कभी ना कभी, किसी ना किसी मोड़ पर रेल सफर किया है, भले ही वो छुट्टी बिताने के लिए घर जाना हो, किसी की शादी, मुहूर्त में या रोज़मर्रा बड़े शहर में अपने ऑफिस या और किसी कारण से हो। रेल के सफर से हमारी कितनी ही भावना जुडी है, भले ही ख़ुशी की हो या दुःख की। हम सबकी कोई न कोई याद रेल सफर से जुडी हुई है, भले ही आज के ज़माने में जहां सड़क और वायुमार्ग से परिवहन रेल को चुनौती दे रहा है पर रेल सफर की अपनी उतनी ही अहमियत है।

मैंने रेल सफर और हमारे रोज़-मर्रा के जीवन में कई समानता देखी है, जैसे कि रेलगाड़ी में अलग-अलग प्रकार की बोगियां होती हैं जैसे सामान्य श्रेणी, स्लीपर (शयनयान) श्रेणी, वातनकुलित फर्स्टक्लास, टू टियर और थ्री टियर श्रेणी। वह कितनी सुविधा और आरामदायक है उसके हिसाब से कीमत बढ़ती है। जो सामान्य श्रेणी में सफर करता है उसकी आशा होती है कि आगे भविष्य में वो और उसका परिवार स्लीपर से सफर करें और जो स्लीपर से अमूमन सफर करता है उसकी इच्छा वातनकुलित से सफर करने की होती है, कोई भी ज्यादा समय तक अपनी परिस्थिति से खुश नहीं रहता। ऐसा तो हर व्यक्ति अपने जीवन में भी करता है, आज जिधर है वो वह ज्यादा समय तक नहीं रहना चाहता भले ही वो आर्थिक या सामाजिक परिस्थिति ही क्यों ना हो, इसके लिए वो जीवनभर मेहनत करता है, कमाता है कि भले ही उम्र के आखरी पड़ाव पर ही सही वो आराम और शांति का जीवन व्यतीत करे और उसका परिवार सुख-सुविधा के साथ रहे।

कहते हैं हर कोई जिसके साथ आप कभी भी मिलते हैं भले ही वो आपके परिवार का सदस्य हो, दोस्त हो, साथ में काम करनेवाले साथी, उन सबका साथ एक निचित समय के लिए ही होता है चाहे वो कितना भी करीबी ही क्यों न हो क्योंकि आपके साथ अंत तक कोई भी नहीं जा सकता सबकी सीमाएं हैं, दायरें हैं। उसी प्रकार ट्रैन में साथ में सफर करनेवाले मुसाफिर भी आपके साथ एक निश्चित समय के लिए ही होता है भले ही कितने करीबी क्यों न हो। साथ ही आप कैसे सफर करते हैं उसका भी बड़ा प्रभाव पड़ताहै, मतलब आप अकेले हो, परिवार के साथ या दोस्तों के साथ और आपके आसपड़ोस के लोग कैसे हैं और कौन कितनी देर तक आपके साथ सफर करता है।

एक और सामानता जो मैंने देखी है वो है, मन की स्तिथि का प्रभाव हमारे सफर पर बहुत ज्यादा असर डालता है, अगर मन शांत है तो सफर कितना भी मुशिकलों से भरा क्यों न हो आसानी से निकल जाता है, आप के लिए भी और आपके साथ सफर करने वालों के लिए भी, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप सामान्य श्रेणी में हो, स्लीपर या ऐसी क्लास में, टिकट कन्फर्म है या वेटिंग है, लेकिन इसके विपरीत अगर आपका मन अशांत है भले ही वो किसी भी कारण से हो, तो अगर आप फर्स्ट क्लास ऐसी में भी क्यों न सफर कर रहे हो, आपके पास बढ़िया खाने-पीने का सामान हो आपका मन नहीं लगेगा और साथ ही माहोल भी गंभीर हो जाता है।

इसलिए मेरे हिसाब से भले ही आप कोई भी सफर क्यों ना करे आप अपने सफर का आनंद लीजिये क्योंकि बाहरी परिस्थिति आपके हाथो में नहीं है लेकिन अपने आपको शांत और स्थिर रखने की जिम्मेदारी आपके हाथ में जरूर है।

आपका सफर मंगलमय हो।

सीनियर सेक्शन इंजीनियर
मध्य रेल, मुंबई छ.शि.म.ट.

मैं , जिंदगी और संघर्ष

रूही कुमारी जायसवाल

मैं दो कदम चलती और एक पल को रुकती मगर,
इस पल में जिंदगी मुझसे चार कदम आगे बढ़ जाती

मैं फिर दो कदम चलती और एक पल को रुकती
मगर जिंदगी मुझसे फिर चार कदम आगे बढ़ जाती
यूँ जिंदगी को जीतती देख मैं मुस्कुराती और
जिंदगी मेरी मुस्कुराहट पर हैरान होती
ये सिलसिला यूँ ही चलता रहा ।
फिर एक दिन मुझे हँसता देख
एक सितारे ने पूछा-
तुम हारकर भी मुस्कुराते हो
क्या तुम्हें दुःख नहीं होता हारकर

तब मैंने कहा-

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
दीवारों पर सौ बार फिसलती है ।
मन का विश्वास रंगों में साहस बनता है
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना कब अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मुझे पता है एक ऐसी सरहद आयेगी
जहाँ से जिंदगी चार कदम तो क्या
एक कदम आगे भी ना बाँध पायेगी और
तब जिंदगी मेरा इन्तजार करेगी और मैं
तब भी यूँ ही चलते, रुकते अपनी रफ्तार से
अपने धुन में वहाँ पहुंचुंगी , एक पल रुककर
जिंदगी की तरफ देखकर मुस्कुराऊँगी
बीते सफर को एक नजर देखकर
अपने कदम बढ़ाऊँगी,
ठीक उसी पल मैं जिंदगी से जीत जाऊँगी|

मैं अपनी हार पर भी मुस्कुराई थी
और अपनी जीत पर भी मुस्कुरायी
और जिंदगी......
अपनी जीत पर भी ना मुस्कुरा पायी थी और अपनी
हार पर भी ना रो पाएगी।
बस तभी मैं जिंदगी को जिंदगी जीना सिखा जाऊँगी।

प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक कार्यालय
मुख्यालय मध्य रेल, मुंबई छशिमट

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।
- रविशंकर शुक्ल

भीड़

देविना चौकसे

बाजार के बीचो-बीच सीमेंट की चौड़ी सड़क के किनारे खानाबदोश परिवार अपना सारा सामान फैलाए करतब दिखाने को तैयार था। इस अतिव्यस्त सड़क में लोग का जमावड़ा आम बात है। ज्येष्ठ की तपती दोपहर में भी पर्याप्त भीड़ एकत्रित कर लेने से परिवार 'अच्छी कमाई' की आशा से खुश था। पूरा 'सेटअप' जम जाने पर करतब चालू किया गया। बांस के दो डंडों की सहायता से बंधी रस्सी पर पायल पहने नन्ही बालिका धीरे- धीरे कदम बढ़ाए जा रही थी। नीचे पिताजी बांसुरी बजा रहे थे, माँ कोई लोकगीत गा रही थी, वहीं भाई और पालतू कुत्ते की अलग जुगलबंदी चालू थी। पसीने से तरबतर लगभग पंद्रह मिनट की मेहनत के बाद लड़का कुत्ते के साथ भीड़ के पास उनके मनोरंजन और अपनी मेहनत के पैसे एकत्रित करने पहुंचा ही था कि अचानक "धड़ाम" की आवाज ने सबका ध्यान आकर्षित किया। स्कूटी सवार महिला और बाइक चला रहे युवान की टक्कर हो गयी थी। दोनों ही दृश्यों से परिचित मैं गन्ने के रस की दुकान पर बैठी कटोरा पकड़े उस लड़के को देखती रह गयी। सब भागकर घटनास्थल पर पहुँच चुके थे। अब कुछ देर भीड़ वहां खड़ी रहेगी।

कनिष्ठ अनुवादक
मध्य रेल मुख्यालय
छशिमट मुंबई

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

मराठी खंड

पुस्तक वाचण्याचे फायदे

सुनील मुकुंद केळकर

भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात, की एक वेळचे जेवण कमी करा पणपुस्तक खरेदी करून वाचा. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर पुढे हे ही म्हणतात की माणसाच्यासहवासापेक्षा मला पुस्तकांचा सहवास जास्त आवडतो. बाबासाहेबांच्या वरील विधानांवरून,पुस्तक वाचणे किती महत्वाचे आहे हे आपल्या लक्षात येते. पुस्तके वाचण्याने आपले बौद्धिकसामर्थ्य वाढते. आपण बहुश्रुत होतो, एकाग्रता वाढते, मानसिक तणाव कमी होतो,मेंदू सक्रियहोतो, स्मरणशक्ती वाढते, आपल्या बोलण्याचा आणि लेखनाचा विकास होतो, आपली वैचारिकशक्ती वाढते, आपल्याला चांगली झोप येते. पुस्तक आपला खरा मित्र असतो. चांगले पुस्तकवाचण्याने आपल्यावर चांगले संस्कार होतात. आपल्यातील समजूतदार पणा वाढतो, आपलाहजरजबाबीपणा वाढतो, आपला संयमीपणा वाढतो, आपले विचार कौशल्य वाढते, आपलेसंवाद कौशल्य वाढते, आपला शब्दकोश वाढतो. पुस्तक वाचनाने आपला आत्मविश्वासवाढतो. मराठीत एक म्हण आहे, "वाचाल तर वाचाल". पुस्तके माणसाला "रद्दी" होण्यापासूनवाचवतात.

पण,एक सत्य आहे की पुस्तक वाचायची असतात, खायची नसतात. पुस्तके कमीवाचावी पण मनापासून वाचावीत. आपण जी पुस्तके वाचतो, त्या पुस्तकांचा आपल्यावरसंस्कार होत असतो. तो संस्कार आपल्या रोजच्या आचरणातून, वागण्यातून,बोलण्यातूनजाणवला पाहिजे म्हणूनच टाईम पास म्हणून पुस्तके वाचण्यापेक्षा आपल्या ज्ञानात, चांगल्यासंस्कारा मधे वाढ होईल अशीच पुस्तके वाचणे महत्वाचे आहे. भारतरत्न डॉ.बाबासाहेबआंबेडकर यांची स्वत: खरेदी केलेली अशी 50000 पुस्तके होती. यावरून ते किती पुस्तकप्रेमी/ज्ञानप्रेमी होते हे सिद्ध होते आणि पुस्तक वाचण्याचे महत्वही सिद्ध होते.

एक उत्तम पुस्तक वाचक, मरण्या अगोदर, हजारो जीवन जगून घेतो असे म्हणतात. आपण वाचत असलेले पुस्तक आपल्याला स्थिर ठेवते पण, जग हिंडवून आणते. आपल्यादिवाणखान्यातील पुस्तके आपला सामाजिक स्थर सिद्ध करत असतात. दिवाणखान्यातीलफर्निचर पेक्षा, दिवाणखान्यातील पुस्तके येणाऱ्या पाहुण्यांवर जास्त प्रभाव टाकत असतात.

आपल्या आयुष्यात दोन गोष्टींचा प्रभाव पडतो एक मित्र आणि एक पुस्तक, पुस्तकालाचआपला मित्र बनवणे जास्त सोयीचे आणि खात्रीचे असते. कारण मित्र कधीतरी,एखाद्या वेळेसआपला शत्रू होण्याची शक्यता असते, पण पुस्तक आपला शत्रू होण्याची, पुस्तकाशी आपलेमतभेद होण्याची शक्यता कधीच नसते. उत्तम लेखक हा प्रथमतः एक उत्तम वाचक असतो हेलक्षात ठेवले पाहिजे. शेतकरी ज्या प्रमाणे पिकवलेल्या धान्यातीलपालापाचोळा,खडे,माती,फोलपटे निवडून फेकून देतो आणि खाण्यायोग्य धान्यच साठवून ठेवतोत्याचप्रमाणे ज्ञान आणि शहाणपण संपादन करण्यासाठी ज्ञानोत्सुक माणूस ग्रंथाभ्यासाचाआधार घेतो आणि अनावश्यक किंवा कमी महत्वाच्या गोष्टी त्याज्य ठरवतो.

जगातील सर्व मोठी माणसे वाचनानेच घडलीत आणि घडणार आहेत. आपल्यालासंपत्ती मिळवायची असेल, तर प्रथम पुस्तकातून ज्ञान आणि ज्ञानातून संपत्ती मिळवता येते.ज्याला पुस्तक वाचता येते त्याला जग वाचता येते असे म्हणतात. पुस्तक विकत घेतल्यानेतुमच्या खिशातील पैसे तात्पुरते कमी होतात पण पुस्तक वाचल्यामुळे तुम्ही कायमचे श्रीमंतहोता, याचा विचार केला पाहिजे. माणसाला दोनच गोष्टी हुशार बनवतात. वाचलेली पुस्तकेआणि भेटलेली माणसे. पुस्तकांमधे पण प्रकार असतात, काही पुस्तके चव घेण्यासाठीअसतात, तर काही थोडी चावून चावून खाण्यासाठी व पचवण्यासाठी. भारतरत्न डॉ.बाबासाहेबआंबेडकर यांनी एका ठिकाणी लिहिले होते, जर तुमच्याकडे दोन नाणी असतील तर,एका नाण्याची भाकरी घ्या आणि एका नाण्याचे पुस्तक घ्या.....
भाकरी तुम्हाला जगवील तर पुस्तक जगण्याची कला शिकवेल.
आपल्या मध्य रेल्वे ची लायब्ररी / पुस्तकालय एक उत्तम पुस्तकांचा खजीना आहे.
सर्वांनी त्याचा लाभ/फायदा घ्यावा असे मी आवाहन करतो.

सहायक सचिव (जन परिवाद)
महाप्रबंधक कार्यालय मध्य रेल,
मुंबई छ शि.म.ट.

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से वश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है।

- अमरनाथ झा

आई

अंजलि महेश तेरवेणकर

आई तुझा हात
उन्हात आभाळाची छाया
आई तुझी माया
साठलेला गोड मध
आई तुझे शब्द
पोथी ग्रंथाची खाण
आई तुझे ज्ञान
जिथे विश्व सारे येते
आई तुझे गाणे
मिळे प्रेम आणि शांती
आई तुझी मूर्ती

अंजलि महेश तेरवेणकर
पति महेश तेरवेणकर
सामान्य सहायक, मुख्यालय राजभाषा विभाग
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

नागरी वर्णमाला के समान सर्वांगपूर्ण और वैज्ञानिक

कोई दूसरी वर्णमाला नहीं है।

- बाबू राव विष्णु पराड़कर

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : (7 जुलाई, 1883 - 11 सितम्बर, 1922) हिंदी के कथाकार, व्यंगकार तथा निबन्धकार थे।
उनकी मुख्य रचनाओं में उसने कहा था, बुद्धू का काँटा, द जयपुर ऑब्ज़रवेटरी एण्ड इट्स बिल्डर्स आदि प्रसिद्ध हैं। इन्हें संस्कृत, हिंदी , अंग्रेज़ी, पालि, प्राकृत, मराठी, बंगला, लैटिन, फ़्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं का ज्ञान था।

मैथिलीशरण गुप्त : (3 अगस्त, 1886 – 12 दिसम्बर, 1964) हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे। हिंदी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी।

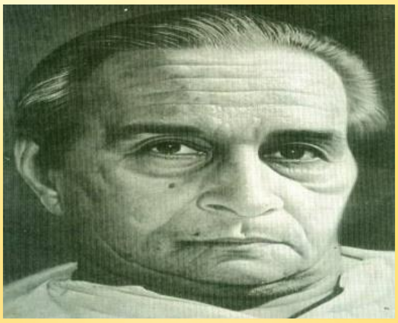

हरिशंकर परसाई : (22 अगस्त, 1924 -10 अगस्त, 1995) हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे। उनका जन्म जमानी, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश में हुआ था। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' : 5 अगस्त, 1915 - 27 नवम्बर, 2002) एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और शिक्षाविद थे। उन्होंने युग का मोल, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, विंध्य हिमालय आदि रचना की व सांसों का हिसाब, चलना हमारा काम है, मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार, असमंजस कविताओं के साथ कई नाटक एवं गद्य रचना भी की।

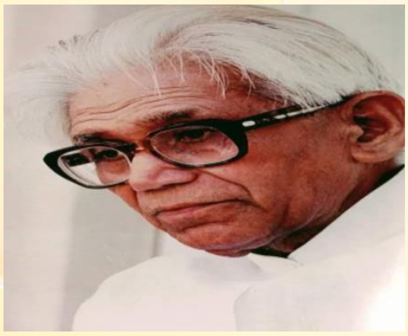

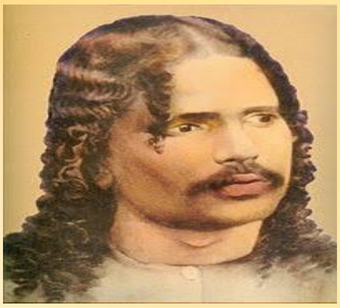

भारतेंदु हरिश्चंद्र : (9 सितम्बर, 1850 - 6 जनवरी, 1885) आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिंदी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि सभी क्षेत्रों में उनकी देन अपूर्व है। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, श्री चंद्रावली, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा आदि उनकी प्रमुख कृतियां हैं।

दुष्यंत कुमार : (27 सितम्बर, 1931 - 30 दिसम्बर, 1975) एक हिंदी कवि, कथाकार और ग़ज़लकार थे। 1975 में उनका प्रसिद्ध ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' प्रकाशित हुआ। इसकी ग़ज़लों को इतनी लोकप्रियता हासिल हुई कि उसके कई शेर कहावतों और मुहावरों के तौर पर लोगों द्वारा व्यवहृत होते हैं। इसके अतिरिक्त एक कंठ विषपायी, 1963 और मसीहा मर गया, सूर्य का स्वागत, आवाज़ों के घेरे, जलते हुए वन का बसंत, छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।